

# हरिभूमि महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि

रोहतक, रविवार, 7 सितंबर 2025

हुडा में माजपा एससी मोर्चा की बैठक आज

नारनौल। हुडा के सेक्टर एक स्थित माजपा कार्यालय मकान नंबर 273 में 7 सितंबर को प्रातः 11:00 बजे एससी मोर्चा जिला महेन्द्रगढ़ की बैठक का आयोजन किया जाएगा, जिसमें मुख्य रूप से एससी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष एवं पटौदी के पूर्व विधायक पाटोदी सत्यप्रकाश जरावता उपस्थित रहेंगे। यह जानकारी देते हुए माजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के जिला महामंत्री एवं पूर्व सरपंच रामनिवास खेड़ी ने बताया कि मीटिंग में अनुसूचित जाति समाज को सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में विस्तार से समझाएंगे। उन्होंने एससी मोर्चा के सभी कार्यकर्ताओं से मीटिंग में पहुंचने की गुजारिश करते हुए कहा कि संगठन को मजबूत करने के लिए इस मीटिंग में भाग लें।

## पहाड़ों में बारिश हुई तो नारनौल तक पानी पहुंचने के आसार रायपुर बांध के ओवरफ्लो पानी का कृष्णावती नदी में एक किलोमीटर तक बहाव

- नांगल चौधरी के एसडीएम उमेश सिंह ने कृष्णावती नदी का किया निरीक्षण
- पंचायत सचिवों को सरपंचों की मदद से निगरानी रखने की सौंपी जिम्मेदारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नांगल चौधरी

दक्षिण हरियाणा में कृष्णावती प्रमुख नदी है, जिसका विकास नीमकाथाना राजस्थान के रायपुर बांध से होता है। पहाड़ों में मूसलधार बारिश होने पर बांध में 16 साल बाद ओवरफ्लो हुआ है तथा 30 साल इंतजार करने के उपरांत कृष्णावती नदी में पानी का बहाव देखने का मिला है। पानी बहाव की सूचना मिलते ही महेन्द्रगढ़ जिला प्रशासन अलर्ट हो गया तथा पंचायत विभाग को सतर्क होने के निर्देश जारी कर दिए। एसडीएम उमेश सिंह कृष्णावती नदी का निरीक्षण करके सरपंचों व पंचायत सचिवों को नदी के बहाव पर नजर रखने की जिम्मेदारी सौंपी है।

आपको बता दें कि कृष्णावती नदी में पहले छह महीने लगातार बहता था। नदी के दोनों तरफ गहरा जंगल था। जिसमें हिरन, गीदड़, नीलगाय व लकडबग्गा समेत विभिन्न प्राणी विचरते थे, लेकिन 1995 के बाद जोरदार बारिश नहीं हुई। जिस कारण नदी सूखी पड़ी है। 2006 के वर्षाकाल रायपुर बांध ओवरफ्लो होने पर अधिकारियों ने आंकड़ी खोली थी, जिसका पानी दोस्तपुर तक पहुंचा था। इसके बाद पहाड़ों में अच्छी बारिश नहीं होने से नदी में पानी का बहाव नहीं हुआ। सूखी पड़ी नदी में खनन माफिया सक्रिय हो गया तथा उन्होंने अंधाधुंध दोहन करके नदी का स्वरूप ही बदल दिया। वाशिंग प्लांट संचालकों द्वारा बहाव में रोड़ी व मिट्टी डालने से नदी की दिशा बदल गई। रायपुर बांध की आंकड़ी खोली गई तो पानी का बहाव ढाणी त्रियाला, ढाणी ठाकरान, जैनपुर, दोस्तपुर, भेड़टीए टीकवाला की तरफ संभव है। नारनौल तक करीब 28 गांवों की 15 हजार एकड़ से अधिक फसल का रकबा

नदी के बहाव पर जिला प्रशासन अलर्ट, कर्मियों की लगाई इयूटी

कृषि विकास अधिकारी डॉ. हरीश यादव ने बताया कि रायपुर बांध का पानी ओवरफ्लो हो गया। देर रात पानी का बहाव कृष्णावती नदी में शुरू होने की रिपोर्ट मिली है। विभाग के फिल्टरमैन को नदी के तट पर बसे गांवों में तैनात कर दिया। दूसरी तरफ पंचायत ने भी ग्राम सचिवों को सरपंचों मदद लेकर ग्रामीणों की सुरक्षा में तैनात किया गया है।

खराब हो जाएगा। बांध ओवरफ्लो होने की रिपोर्ट पर राजस्थान प्रशासन अलर्ट हो गया। बांध के साथ लगते गांवों को नदी के बहाव मार्ग से दूर रहने का सुझाव दिया गया है। स्थानीय बीडीपीओ व तहसीलदार को 24 घंटे बांध में बढ़ रहे जल स्तर पर नजर रखने की हिदायत है। इधर देर शाम नांगल चौधरी के बीडीपीओ व कृषि विकास अधिकारी ने कर्मचारियों को नदी के साथ लगते गांवों में तैनात कर दिया। बाढ़ की स्थिति में बचाव



नांगल चौधरी। रायपुर बांध का ओवरफ्लो पानी नदी में कूदता हुआ। फोटो: हरिभूमि

के लिए ग्रामीणों को विशेष प्रशिक्षण देने की योजना बनाई। गई है। नदी के निरीक्षण के दौरान

एसडीएम ने भेड़टी में पहुंचकर नदी का किया निरीक्षण

जिला उपायुक्त के निदेशानुसार नांगल चौधरी के एसडीएम उमेश सिंह ने कृष्णावती नदी का निरीक्षण किया। उन्होंने नदी के दोनों किनारों का अवलोकन किया व कमजोर किनारों पर मिट्टी डलवाई, ताकि गांव की तरफ पानी का रिसाव नहीं हो पाए। उन्होंने बताया कि पानी का बहाव नांगल चौधरी से अभी 10 किलोमीटर दूर है। ग्रामीणों को घबराने की जरूरत नहीं है, लेकिन चौकन्ना रहना अनिवार्य है।

मूजल स्तर बढ़ने पर किसानों के सूखे बोरेवेल चालू हो सकेंगे

शहजापुर, दोस्तपुर, भेड़टी, ढाणी जाजना, नोलाजा के ग्रामीणों ने बताया कि कृष्णावती नदी में पानी आया तो करीब 53 से अधिक गांवों में मूजल रिचार्ज होगा। विभिन्न बांध व पत्तरी की खदनों में पानी भरने पर किसानों के बंद पड़े बोरेवेल दुबारा चालू हो जाएंगे। जिससे 10 साल तक फसलों की सिंचाई करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा नदी में पौधरोपण हो सकेगा जिससे ग्रामीणों को शुद्ध पर्यावरण मिल सकेगा।

### रायपुर बांध का ओवरफ्लो पानी का दीवार के ऊपर से बहना शुरू

राजस्थान प्रशासन के मुताबिक रायपुर बांध पर 15 फिट ऊंची दीवार का निर्माण कराया गया है। 14 फिट की ऊंचाई पर आकड़ी यानी मोरी का प्रबंध किया है। जिसे जरूरत पड़ने पर खोलने का प्रबंध है। लेकिन पहाड़ों में तेज बारिश होने पर पानी 15 फिट की दीवार को कांस कर गया है। बांध से नारनौल तक नदी में आठ से अधिक बांध तथा दोस्तपुर, मौजूका, भेड़टी के पास कृष्णावती नदी में हजारों फिट गहरी खदान हैं, जिसके भरने के बाद ही बांधों में पानी भरना संभव हो पाएगा।

एसडीएम के साथ बीडीपीओ नवदीप, सिंचाई कुमार, महेश कुमार, रविंद्र कुमार, विकास आदि विभाग के कार्यकारी अभियंता, एसडीओ देवेन्द्र मौजूद रहे।

## तीन बार चुनावी बैठक स्थगित होने के बाद चौथे प्रयास में मिली सफलता

# आरती गुट की हार, लोढ़ा गुट से सूबेसिंह बने उपप्रधान

- कनीना नया में सूबेसिंह अपने प्रतिद्वंदी राकेश कुमार को एक मत से पराजित किया
- 15 वोटों में से वार्ड 13 के पार्षद सूबेसिंह को 8 व वार्ड छह के पार्षद राकेश कुमार को मिले 7 मत
- भारी पुलिस बल की तैनाती व चुनाव अधिकारी एसडीएम के निर्देशन में ईवीएम से शांतिपूर्वक हुआ मतदान
- नया क्षेत्र में डीजे की धुन पर निकाला विजय जुलूस

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कनीना

बीते मार्च माह में सम्पन्न हुए नगर पालिका चुनाव के बाद शनिवार को वाइस चेयरमैन पद का चुनाव ईवीएम से करवाया गया। सुबह 10 बजे से दोपहर एक बजे तक चली चुनावी कार्रवाई में स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह



राव व राजेंद्र लोढ़ा दो गुट माने जा रहे थे। 15 मतों वाले चुनाव में राजेंद्र सिंह लोढ़ा गुट के वार्ड 13 के पार्षद सूबेसिंह को आठ, तो स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव गुट के वार्ड छह के पार्षद राकेश कुमार को सात मत मिले। सूबेसिंह ने अपने प्रतिद्वंदी राकेश कुमार को एक मत से करारी शिकस्त दी। भारी पुलिस बल की तैनाती के बीच चुनाव अधिकारी एसडीएम डॉ. जितेंद्र सिंह अहलावत के दिशानिर्देश में शांतिपूर्वक चुनाव हुआ। सूबेसिंह के चुनाव जीतने की

कनीना। जीत दर्ज करने के बाद चेयरपर्सन डॉ. रिप्पी लोढ़ा के साथ विजय चिह्न बनाते पार्षद सूबेसिंह व अन्य। फोटो: हरिभूमि

सूचना मिलने पर नया कार्यालय के बाहर खड़े समर्थकों ने डीजे की धुन पर गुलाल उड़ाकर खुशी जताई। इसके बाद चर्चनित उपप्रधान ने पार्षदों व गणमान्यजनों के साथ विजय जुलूस निकाला। चुनाव अधिकारी एसडीएम डॉ. जितेंद्र सिंह अहलावत ने बताया कि अधिसूचना जारी होने के बाद शनिवार को सुबह 10 बजे चुनावी बैठक का एजेंडा जारी कर नया चेयरपर्सन डॉ. रिप्पी लोढ़ा, वार्ड एक से पार्षद मंजू देवी, दो से दीपक चौधरी, तीन से उषा

देवी, चार से रेखा देवी, पांच से राजकुमार, छह से राकेश कुमार, सात से राजेश देवी, आठ से पूजा देवी, नौ से नितेश गुप्ता, 10 से योगेश कुमार, 11 से होशियार सिंह, 12 से सुमन देवी, 13 से सूबेसिंह व 14 से राजेंद्र सिंह सहित दो मनोनीत पार्षद सवाई सिंह व नीलम देवी सहित लोकसभा सांसद धर्मबीर सिंह, स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव, राज्य निर्वाचन आयोग, महानिदेशक यूपलबीए कमिश्नर गुरुग्राम, उपायुक्त नारनौल को भेजी गई थी।

उन्होंने बताया कि नगर पालिका के नवनिर्वाचित प्रतिनिधियों को 25 मार्च के दिन पंचकूला में शपथ दिलाई गई थी। इसके बाद उप प्रधान पद के चुनाव के लिए तीन बार प्रयास किए, जो कि नहीं वजह से टल गए। अब कोर्ट के आदेश पर चौथी बार अधिसूचना जारी की गई, जिसमें चुनाव शांतिपूर्वक तरीके से सम्पन्न हुए।

### एफसीसी गठन के बाद सूबेसिंह को ही माना जा रहा था उप प्रधान

बता दें कि बीती 11 अगस्त को एफसीसी कमेटी गठन के समय भी चुनाव प्रक्रिया अपनवाई गई थी। इस कमेटी में दो पार्षदों सहित चेयरपर्सन, वाइस चेयरमैन, सचिव, एमई सहित छह सदस्य शामिल होते हैं। बहुमत से यह कमेटी एक करोड़ रुपये तक के विकास कार्य करवा सकती है। इस कमेटी में पार्षद सूबेसिंह के सहयोग से लोढ़ा गुट के दो पार्षद वार्ड तीन से उषा यादव व नौ से नितेश गुप्ता चुने गए थे। इस कमेटी के गठन के बाद सूबेसिंह के उप प्रधान पद विराजमान होने की तस्वीर लगभग साफ हो गई थी। इस मौके पर सिटी थाना अध्यक्ष रविंद्र सिंह, विक्रम सिंह, पूर्व वाइस चेयरमैन अशोक कुमार, सुमेर सिंह, सुरेश यादव, सुभाष चंद, दीपक कुमार आदि मौजूद थे।

### सैनी क्षेत्रीय सभा के मेन गेट पर लगे ताले को खोला, चुनाव आज

महेन्द्रगढ़। सैनी क्षेत्रीय सभा की मेन गेट पर लगे ताले को इयूटी मजिस्ट्रेट अरुण कुमार की मौजूदगी में शनिवार को खोल दिया गया है। इस दौरान भारी पुलिस बल भी तैनात रहा। चुनाव अधिकारी डॉ. योगेंद्र यादव ने बताया कि सात सितंबर को चुनाव को शांतिपूर्वक तरीके से करने के लिए प्रशासन की तरफ से सिंचाई विभाग के एसडीओ अरुण कुमार को इयूटी मजिस्ट्रेट लगाया गया है तथा तहसीलदार अजय कुमार को पर्यवेक्षक लगाया गया है। शनिवार को इयूटी मजिस्ट्रेट दिनभर मौजूद रहे। वहीं सिटी एसएचओ एतन कुमार ने भी सैनी सभा भवन का दौरा किया और चुनाव को लेकर किए जा रहे सुरक्षा प्रबंधों का जायजा लिया। सुरक्षा प्रबंध के लिए तीन सीसीटीवी कैमरे भी लगाए गए हैं। रविवार सात सितंबर को सुबह नौ बजे वॉटिंग शुरू हो जाएगी, जो शाम चार बजे तक चलेगी। बता दें कि पिछले कुछ दिनों से इस चुनाव को लेकर विवाद गहराता जा रहा था। सैनी सभा चुनाव को लेकर पिछले दिनों विवाद गहराने पर तीन अलग-अलग याचिकाएं दायर की थीं। इनमें आरोप लगाया गया था कि जिला रजिस्ट्रार और प्रशासन ने अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करते हुए दूसरी पार्टी को लाभ पहुंचाने के लिए चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित किया है। हालांकि, हाईकोर्ट ने विस्तृत सुनवाई के बाद सभी आरोपों को निराधार माना और साफ कहा कि जिला रजिस्ट्रार का आदेश पूरी तरह वैध है।

## आप सभी को हरिभूमि के 30वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

The Choice of Prudent Parents

DEVYANI INTERNATIONAL SCHOOL

Affiliated to CBSE Code : 530875

NO.1 A Leading Institution in Mahendergarh

जहाँ मूल्यों, सिद्धान्तों एवम् मानदण्डों से कोई समझौता नहीं!

10th Class CBSE TOPPER 2024-25

Vishu D/o Virender & Sushila Village - Bhalkhi 96.2%

12th Class CBSE TOPPER 2024-25

Isha (ECM) D/o Rajesh & Sunita Village - Dongra Jat 94.66%

Experience 360° Holistic Education

33% students scored more than 80% marks in 10th Class

70% students scored more than 80% marks in 12th Class

## हम इंजीनियर ही नहीं संस्कारवान इंजीनियर बनाते हैं।

2024-25 NITians / IITians 2023-24

NIT TRICHY TANISH S/o Hanuman Ramchandpura (Pursuing B.Tech) (Bio Technology)

NIT KURUKSHETRA HARKESH S/o Sh. Jitender Pursuing B.tech (CS)

NIT KURUKSHETRA KIRTI D/o Sh. Surender Pursuing B.tech (Civil)

NIT ROURKELA MUKESH S/o Sh. Ajeet Pursuing B.tech (Civil)

NIT KURUKSHETRA PREETI D/o Sh. Rajkumar Pursuing B.tech (ECE)

IIT BOMBAY NEHA D/o Sh. Ajeet Khairana (Pursuing B.Tech) (Physics Engineering)

DISTRICT WINNER in HANDBALL U-17 (Girls)

BLOCK WINNER in KHO-KHO U-19 (Girls & Boys)

2nd POSITION in CLUSTER XV KHO-KHO U17(Boys)

DIST. TOPPER in GROUP DANCE Competition

# लगातार दमक रहे सोना-चांदी, आठ माह में दिया 36% व 42% तक रिटर्न

- ▶ रिटर्न देने में सभी एसेट्स को पीछे छोड़ा, निवेशक मालामाल
- ▶ सही रणनीति बनाकर निवेश किया जाए तो मिलेगा फायदा
- ▶ हाल में आई तेजी के बीच सोने में निवेश की सही प्लानिंग करें
- ▶ गोल्ड व सिल्वर पर आधारित ज्यादातर ईटीएफ ने 40% से ज्यादा रिटर्न दिया

## निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

दुनिया में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ की दहशत के बीच सोना-चांदी निवेश के सबसे भरोसेमंद विकल्प बनकर उभर रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक सोने ने इस साल अब तक 8 माह में करीब 36% तक और चांदी ने करीब 42% तक रिटर्न दिया है। यानी इन 8 महीनों में चांदी सोने से काफी आगे निकल गई है। अगर रुपये में बात करें तो चांदी 37,281 रुपये प्रति किलोग्राम महंगा हुई है। वहीं, सोना 27,976 रुपये प्रति 10 ग्राम महंगा हुआ है। जानकारों का कहना है कि इस साल के आखिरी तक रिटर्न के मामले में चांदी सोने को बहुत पीछे छोड़ सकती है। सोने लगातार बढ़ती कीमतों के बीच लोगों को अब इसमें प्लानिंग तहत निवेश करना होगा। वरना यह झटका भी दे सकता है। हालांकि कहा जाता है कि सोना पुराने समय से ही भरोसे का निवेश रहा है। सोने-चांदी की कीमतों में जबरदस्त तेजी देखी जा रही है। बीते एक साल में गोल्ड और सिल्वर पर आधारित ज्यादातर ईटीएफ ने भी 40% से ज्यादा एक्जट रिटर्न दिया



है। निवेशकों के लिए बड़ा सवाल यह है कि क्या इस तेजी के बाद अब भी सोने-चांदी में निवेश करना सही रहेगा? और अगर हां, तो किस तरीके से।

## सोने-चांदी की कीमतें रिकॉर्ड ऊंचाई पर

सोने-चांदी की कीमतें नई ऊंचाईयों पर चढ़ी हैं। इनका असर ईटीएफ पर भी पड़ा है। पिछले 12 महीनों में गोल्ड ईटीएफ ने औसतन 40.44% का रिटर्न दिया है। इस दौरान 16 गोल्ड ईटीएफ मार्केट में एक्टिव रहे, जिनमें टाटा गोल्ड ईटीएफ ने सबसे ज्यादा 40.76%, आईसीआईसीआई प्रूडिशियल गोल्ड ईटीएफ ने 40.74% और आदित्य बिरला सनलाइफ गोल्ड ईटीएफ ने भी 40.67% का मजबूत रिटर्न दिया।

## वर्षों बढ़ रही है सोने-चांदी की चमक

जानकारों के मुताबिक सोने और चांदी की कीमतों में यह उछाल जियो-पॉलिटिकल टेंशन, टैरिफ को लेकर जारी उथल-पुथल और इंस्ट्रुमेंटल डिमांड की वजह से आया है। खासतौर पर सिल्वर की डिमांड सेमीकंडक्टर, सोलर पैनल, इलेक्ट्रिकल टूल्स (इवी) और वॉन टेक्नोलॉजी में ज्यादा हो रही है। यही वजह है कि चांदी 10 साल के ऊंचे स्तर पर पहुंची है। सोना पारंपरिक रूप से एक डिफेंसिव एसेट माना जाता है, जो बाजार में अनिश्चितता और डर के समय निवेशकों को सुरक्षा देता है। यही कारण है कि हर अस्थिर दौर में सोने की कीमतें ऊपर जाती हैं।

## पोर्टफोलियो में कितना हो गोल्ड-सिल्वर का हिस्सा

आपके पोर्टफोलियो में सोने-चांदी की हिस्सेदारी 10-20% से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। बाकी निवेश इक्विटी और डेट में होना चाहिए। आमतौर पर 80:20 का इक्विटी-डेट रेशियो संतुलित माना जाता है, और सोना-सिल्वर इसमें हेजिंग यानी रिस्क से बचाने का काम करते हैं। इसका मतलब है कि गोल्ड और सिल्वर आपके लगातार ऊंचा रिटर्न नहीं देंगे, लेकिन आपके पोर्टफोलियो को अस्थिरता से बचाने और डाइवर्सिफिकेशन देने का काम करेंगे।

## ईटीएफ और एसआईपी के जरिये निवेश बेहतर

सोने-चांदी की मौजूदा ऊंची कीमतों पर एकमुश्त निवेश करना जोखिम भरा हो सकता है। बेहतर है कि निवेशक एसआईपी (एसआईपी) के जरिये धीरे-धीरे इनमें पैसा लगाएं। इससे कीमतों के उतार-चढ़ाव की एक्जिजिंग हो जाती है और लंबी अवधि में बेहतर नतीजे मिलते हैं। ईटीएफ सोने-चांदी में निवेश का सबसे आसान और ज्यादा पारदर्शी तरीका है। गोल्ड ईटीएफ में हर यूनिट आम तौर पर 1 ग्राम सोने की वैल्यू को बताती है। इन्हें आप डिमेंट अकाउंट के जरिये शेयरों की तरह खरीद-बेच सकते हैं। सिल्वर ईटीएफ भी इसी तरह काम करते हैं।

## निवेशकों के लिए क्या है सही रणनीति

अगर आप सोने-चांदी में निवेश करना चाहते हैं तो इसे स्पेक्युलेटिव यानी सट्टे नजरिए से नहीं बल्कि एसेट एलोकेशन के नजरिए से देखें। यह लंबे समय में आपके पोर्टफोलियो में स्टैबल और सुरक्षित बनाने है।  
▶ पोर्टफोलियो में गोल्ड और सिल्वर की हिस्सेदारी 10-20% तक रखें  
▶ एकमुश्त निवेश की बजाय एसआईपी से धीरे-धीरे खरीदें  
▶ ईटीएफ को प्रायोरिटी दें क्योंकि वे पारदर्शी, आसान और लिक्विड होते हैं



▶ अगर प्रोफेशनल मैनेजमेंट चाहिए तो मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड भी विकल्प हो सकते हैं

## सावधानी से बढ़ाएं कदम

सोने-चांदी में तेजी के बावजूद निवेशकों को सावधानी से कदम बढ़ाना चाहिए। यह सही है कि हाल में ईटीएफ ने 40% तक का रिटर्न दिया है, लेकिन भविष्य में इनका रोल मुख्य रूप से पोर्टफोलियो को स्टैबल रखने और जोखिम कम करने का रहेगा। सही रणनीति यही है कि इन्हें लंबी अवधि के लिए एसेट एलोकेशन का हिस्सा बनाएं, न कि शॉर्ट-टर्म मुनाफे के लिए। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि 2025 की पहली छमाही में सोने में जो तेजी देखी गई है, वह लंबी खिंच सकती है और अब नई खरीदारी से बचना चाहिए, क्योंकि कीमतें पहले से ही काफी ऊंचाई पर पहुंच गई हैं।

# क्या होती है नो-कॉस्ट ईएमआई क्या सच में नहीं लगता ब्याज?

## जानकारी

बिजनेस डेस्क

त्यो हारी सीजन आते ही ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्मों और बैंक 'नो-कॉस्ट ईएमआई' का खूब प्रचार करते हैं। मोबाइल, लैपटॉप, टीवी से लेकर फ्रिज और वॉशिंग मशीन तक, हर जगह यह ऑफर देखने को मिल जाता है। सुनने में तो यह बहुत लुभावना लगता है कि महंगी चीज बिना ब्याज के आसान किस्तों में मिल जाएगी। इसे देखकर अक्सर ग्राहक भी ललचा जाते हैं और ज्यादा से ज्यादा सामना खरीदने का प्रयास करते हैं। ऐसे त्योहारी सीजन में खासकर होता है। लेकिन क्या नो-कॉस्ट ईएमआई सच में 'फ्री' है? इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे ही कुछ तथ्य जिनसे पता चलेगा की नो-कॉस्ट ईएमआई कभी भी फ्री नहीं होता। इसके कुछ नुकुछ हैंडक चार्ज जरूर होते हैं, जिन्हें बहक बड़ी अंशानी से एडजस्ट करते हैं और कस्टमर को पता तक नहीं चलने देते। आइए एक्सपर्ट समझते हैं नो-कॉस्ट का पूरा खेल। जानकारों का कहना है कि नो-कॉस्ट ईएमआई का मतलब यह होता है कि जब आप कोई प्रोडक्ट किस्तों में खरीदते हैं, तो आपको अतिरिक्त ब्याज नहीं देना पड़ता। लेकिन हकीकत में 'नो कॉस्ट' ईएमआई पूरी तरह से फ्री नहीं होती, बल्कि इसमें ब्याज या चार्ज को अलग तरीके से एडजस्ट किया जाता है।

- ▶ जानिए कैसे रिटेलर और बैंक ब्याज को एडजस्ट करते हैं
- ▶ किस तरह सही ऑफर चुनकर बचत की जा सकती है
- ▶ कोई भी सामान खरीदने से पहले एक बार जरूर देख लें
- ▶ तकनीकी रूप से देखें, तो 'नो कॉस्ट ईएमआई' कभी पूरी तरह मुफ्त नहीं होता



## कैसे काम करती है नो-कॉस्ट ईएमआई

**डिस्काउंट या सब्सिडी:** अब मान लीजिए कि आपने 30,000 का स्मार्टफोन ईएमआई पर खरीदा। इसकी ईएमआई पर बैंक ब्याज लेना, क्योंकि यही तो उसका बिजनेस है। सामान्य ईएमआई पर बैंक 12% ब्याज दर से 12 महीने की ईएमआई बनाएगा। ऐसे में कुल लागत लगभग 31,800 रुपये हो जाती, लेकिन रिटेलर या ब्रांड आपको ब्याज जितना डिस्काउंट दे देता है। उसल में आप कुल 30,000 ही चुकते हैं। 1,800 के ब्याज का बोझ कंपनी उठा लेती है। कई ऑफर में ब्याज सीधे नहीं दिखाया जाता। यानी आपको लगता है नो-कॉस्ट ईएमआई है, कोई ब्याज नहीं लगेगा। जैसे कि प्रोडक्ट का केश प्राइस 30,000 है। डिस्काउंट के साथ यह 27,000 में मिलता। ईएमआई पर वही प्रोडक्ट 30,000 के कुल ईएमआई में बांट दिया गया। आपको लगता है नो-कॉस्ट ईएमआई है, लेकिन आप 3000 रुपये की बचत गंवा रहे।

**क्या वाकई मुफ्त है नो-कॉस्ट ईएमआई:** अगर तकनीकी रूप से देखें, तो नो-कॉस्ट ईएमआई कभी पूरी तरह मुफ्त नहीं होता। अगर रिटेलर सब्सिडी दे रहा है तो उसका खर्च कंपनी वहन कर रही है, जिससे उसका मार्जिन घटता है। अगर कीमत बढ़ाकर एडजस्ट किया गया है तो ग्राहक को इनडायरेक्ट तरीके से ब्याज ही चुकना पड़ता है।  
**कई बार नहीं मिलते ऑफर:** कई बार नो-कॉस्ट ईएमआई के साथ अन्य डिस्काउंट ऑफर उपलब्ध नहीं होते। यानी केशविक या कूपन का फायदा हाथ से जा सकता है। जैसे कई बार कंपनियां 30,000 के प्रोडक्ट का एएमआई ही 32,000 लिख देती हैं और नो-कॉस्ट ईएमआई पर बेचती हैं। ग्राहक को लगता है कि ब्याज नहीं लगा, जबकि उसने पहले से बड़ी हुई कीमत चुका दी।

## क्या है आरबीआई का नियम

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने 2013 में साफ किया था कि नो-कॉस्ट ईएमआई स्कॉप्स में ब्याज शुल्क दिखाया जा सकता है। इसके बाद एनबीएफसी और बैंकों ने इन ऑफर्स को अलग तरह से डिजाइन किया। अब प्रिवेटकली ब्याज का बोझ मैनुफैक्चरर या रिटेलर उठाता है, ग्राहक को 'नो-कॉस्ट' का अनुभव देने के लिए।

## इन बातों पर जरूर दें ध्यान

एमआरपी और सेलिंग प्राइस चेक करें। जैसे कि क्या ईएमआई प्रोडक्ट अगली डिस्काउंट प्राइस पर मिल रहा है या बड़ी हुई कीमत पर? ऑफर्स की तुलना करें। कई बार सीधा डिस्काउंट ऑफर लेना नो-कॉस्ट ईएमआई से सस्ता पड़ता है। प्रोसेसिंग फीस देखें। कुछ बैंकों में प्रोसेसिंग फीस या जीएसटी अलग से लिया जाता है। टेब्योर को जरूर समझें। जैसे कि ईएमआई कितने महीनों में देंगे और क्या पहले भुगतान करने पर कोई डिस्काउंट लगेगा? अपने बजट में भी ध्यान दें। किस्तों में पेमेंट आसान लगता है, लेकिन खर्च बढ़ाने का लालच भी दे सकता है।

# सैलरी का सिर्फ 10 पर्सेंट हर महीने बचाकर भी बन सकते हैं करोड़पति

- पहले लक्ष्य तय करें, इसके बाद लंबे समय तक निवेश में डटे रहें
- 30 साल में बनाया जा सकता है 1.23 करोड़ का फंड
- छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश बना देगा धनवान

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

## ऐसे समझें निवेश का गणित

मान लीजिये आपकी उम्र अभी 22 साल है और वह एक प्राइवेट कंपनी में काम करते हैं। आपकी हर महीने की सैलरी 40,000 रुपये है। युवा उम्र में ही आपने तय कर लिया कि वह अपनी रिटायरमेंट की प्लानिंग अभी से शुरू करने में आपको हर महीने अपनी कमाई का सिर्फ 10% यानी 4,000 को न्यूयुअल फंड की एसआईपी में लगाना शुरू करना होगा। इसे आप किसी भी हालत में निकांते नहीं और समय के साथ अपने फंड का बढ़ाते जाएंगे। आप देखेंगे की कुछ ही समय में आपका पैसा बढ़ने लगेगा।

## 50 की उम्र तक करोड़पति बनने के

अगर आप अपना लक्ष्य लेकर चलते हैं और निवेश को लगातार बढ़ाते जाएंगे तो आखिरी से 50 साल की उम्र तक करोड़पति बन सकते हैं। इसके कंपाउंडिंग का पैसा आपकी रकम को और बढ़ाता जाएगा। आपका लक्ष्य था कि जब वह 50 साल की उम्र को पार करें, तो उसके पास एक करोड़ रुपये से ज्यादा का रिटायरमेंट फंड हो। इस तरह आपका लक्ष्य पूरा हो सकेगा। इसके लिए आपको लगातार 30 साल तक 4,000 हर महीने एसआईपी में निवेश करना जरूरी होगा। एसआईपी के लिए 12% सालाना रिटर्न वाले इक्विटी म्यूचुअल फंड को चुनना होगा।

## बचत



## पूरा कैलकुलेशन

आपने 30 साल तक हर महीने 4,000 की एसआईपी की। इस तरह उसका कुल निवेश 4,000 x 12 महीने x 30 साल = 14,40,000 रुपये हुआ। इस निवेश पर उसे 12% की औसत वार्षिक रिटर्न दर मिली। कंपाउंडिंग के जादू से 30 साल बाद उसका निवेश बढ़कर 1,23,23,893 रुपये हो गया। यानी, 14.4 लाख रुपये निवेश करने पर उसे 1,08,83,893 का रिटर्न मिला। यह दिखाता है कि लंबे समय तक नियमित निवेश करने से छोटी रकम भी करोड़ों में बदल सकती है।

## युवाओं के लिए बड़ी सीख

यह कहानी हर युवा के लिए प्रेरणादायक हो सकती है जो अपनी रकम को बढ़ाना चाहते हैं। अक्सर लोग सोचते हैं कि रिटायरमेंट या भविष्य की प्लानिंग के लिए बड़ी सैलरी या मोटा निवेश जरूरी है, लेकिन सही रणनीति, अनुशासन और जल्दी शुरुआत से यह लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। अगर आप 10 साल बाद यानी 32 साल की उम्र में निवेश शुरू करता, तो उसे 20 साल का समय मिलता। इतने समय में उसका निवेश लगभग आधा ही होता। इससे साबित होता है कि निवेश जितनी जल्दी शुरू करें, उतना बेहतर।

## ये मंत्र भी अपनाएं

- वित्तीय शिक्षा प्राप्त करें**  
वित्तीय शिक्षा आपको पैसे के प्रबंधन, निवेश व बचत के बारे में जानने में मदद करेगी। यह आपको वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ठोस योजना बनाने में मदद करेगी।
- नियमित बचत करें**  
नियमित बचत करना करोड़पति बनने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अपने आय का एक हिस्सा नियमित रूप से बचाएं और इसे निवेश में लगाएं।
- निवेश करें**  
निवेश करना आपके पैसे को बढ़ाने का एक अच्छा तरीका है। शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड, और रियल एस्टेट जैसे विभिन्न निवेश विकल्पों का पता लगाएं और अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार निवेश करें।
- व्यवसाय शुरू करें**  
व्यवसाय शुरू करना करोड़पति बनने का एक अच्छा तरीका है। अपने आय का एक हिस्सा निवेश के अनुसार व्यवसाय शुरू करें और इसे सफल बनाने के लिए कड़ी मेहनत करें।
- नेट वर्थ बढ़ाएं**  
नेट वर्थ बढ़ाने के लिए, अपनी आय बढ़ाने और व्यय कम करने पर ध्यान दें। अपने खर्चों का भुगतान करें और अपनी संपत्ति बढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत करें।
- धीरे रखें**  
करोड़पति बनने में समय लगता है। धीरे रखें और अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करते रहें।
- वित्तीय अनुशासन**  
वित्तीय अनुशासन करोड़पति बनने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनुशासन में रहें और अपने व्यय को नियंत्रित रखें।
- नेटवर्क बनाएं**  
नेटवर्क बनाना करोड़पति बनने में मदद कर सकता है। अपने उद्योग में लोगों से मिलें और अपने व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए नेटवर्क का उपयोग करें।
- जोखिम उठाएं**  
जोखिम उठाना करोड़पति बनने का एक हिस्सा है। अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जोखिम उठाने के लिए तैयार रहें, लेकिन जोखिम को प्रबंधित करने के लिए भी तैयार रहें।
- सीखना जारी रखें**  
सीखना जारी रखना करोड़पति बनने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उद्योग में नवीनतम रुझानों और तकनीकों के बारे में सीखें व अपने कौशल को बेहतर बनाने के लिए काम करें।

# प्लानिंग जैसे-जैसे आय बढ़ती है, वैसे-वैसे निवेश की रफ्तार को भी बढ़ाएं, इससे जल्द पैसा बढ़ेगा

अनावश्यक खर्च करने से बचें, ऑफर का देखकर ललचाएं नहीं निवेश की अच्छी रणनीति बनाएं और अपने भविष्य को सुरक्षित करें

# जीवन में आगे बढ़ने के साथ, बढ़ाते जाएं अपना निवेश, स्टेप अप एसआईपी आपको अमीर बनाने में निभाएगी बड़ी भूमिका

## सुझाव

अगर आप भी निवेश करके अपना पैसा बढ़ाना चाहते हैं तो आपको थोड़ा संयम बरतना होगा और जीवन में आगे बढ़ने के साथ-साथ अपने निवेश को भी बढ़ाना होगा। तभी आप अपने धन को बढ़ा पाएंगे और बुढ़ापे में खुद को आर्थिक रूप से मजबूत रख पाएंगे। देखने में आता है कि नए अवसर, बड़े सपने और बदलती जीवनशैली के साथ जीवन आगे बढ़ते रहने की कहानी है। जैसे-जैसे आपकी आय बढ़ती है, वैसे-वैसे आपकी ख्वाहिशें और खर्च भी बढ़ते हैं। क्या आपकी निवेश रणनीति भी इसी रफ्तार से आगे बढ़ रही है? जिस तरह आप अपने सपनों की नई बाइक खरीदते हैं, या बेहतर घर में शिफ्ट होते हैं, उसी तरह जरूरी है कि आप अपने एसआईपी (सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान) को भी अपग्रेड करें ताकि, जो आपके बदलते जीवन के साथ कदम से कदम मिला सके। आइए समझते हैं कि स्टेप-अप एसआईपी (एसआईपी राशि को बढ़ाना) क्या है और कैसे यह आपको वित्तीय रूप से आगे बनाए रखने में मदद करता है।

## स्टेप-अप एसआईपी क्या है?

स्टेप-अप एसआईपी (जिसे टॉप-अप एसआईपी भी कहा जाता है) एक ऐसी सुविधा है जिसमें आप अपने एसआईपी निवेश को हर अंतराल पर (सालाना या अर्धवार्षिक) एक निश्चित राशि या प्रतिशत के हिसाब से बढ़ा सकते हैं। इसका मतलब है कि हर महीने एक ही राशि निवेश करने की बजाय, आप जैसे-जैसे कमाते हैं, वैसे-वैसे अपना निवेश भी बढ़ाते हैं।

## आपकी बढ़ती आय और खर्चों के साथ तालमेल

जब आपकी सैलरी बढ़ती है या प्रमोशन होता है, तो आपकी जीवनशैली भी बेहतर होती है। शायद आप नई बाइक खरीदते हैं, बेहतर फ्लैट में शिफ्ट होते हैं, या खूब घूमते हैं। ऐसे में खर्च बढ़ता है और आर्थिक लक्ष्य भी बड़े हो जाते हैं। एसआईपी को स्टेप-अप करके आप यह सुनिश्चित करते हैं कि आपकी बढ़ती आय और आकांक्षाओं के साथ आपके निवेश का तालमेल बना रहे।

## महंगाई को मात देने के लिए निवेश जरूरी

हर साल महंगाई की वजह से जीवन-यापन में



होने वाला खर्च बढ़ता रहता है। अगर आपकी एसआईपी की राशि एक स्थान ही रहती है, तो भविष्य में वह आपकी जरूरतों, लक्ष्यों को पूरा नहीं कर पाएगी। एसआईपी बढ़ाने से आपका निवेश तेजी से बढ़ता है और आप महंगाई के असर से बेपरवाह रह सकते हैं।  
**बड़े लक्ष्य जल्दी हासिल करें**  
स्टेप-अप एसआईपी के जरिए आप अपने आर्थिक लक्ष्यों को जल्दी हासिल कर सकते हैं। इसकी मदद से आप बड़े सपनों जैसे लक्जरी कार, विदेश यात्रा या रिटायरमेंट के लिए बड़ी रकम को भी बिना किसी आर्थिक तनाव के हासिल कर सकते हैं।  
**चक्रवृद्धि ब्याज की ताकत का जादू**  
हर साल एसआईपी की राशि थोड़ी सी भी बढ़ाने पर लंबे समय में आपकी संपत्ति में बड़ा फ्रक देखने को मिल सकता है। जितनी जल्दी और जितना अधिक आप निवेश करते हैं, रिटर्न उतना ही ज्यादा होता है। इसी को चक्रवृद्धि ब्याज की ताकत कहते हैं।

## स्टेप-अप एसआईपी कैसे काम करता है?

- ▶ मान लीजिए आप 5,000 रुपये प्रति माह की एसआईपी शुरू करते हैं, जिसमें हर साल 1,000 रुपये स्टेप-अप करते हैं।
- ▶ पहले साल में, आप 5,000 रुपये/माह निवेश करते हैं
- ▶ दूसरे साल में, यह 6,000 रुपये/माह हो जाता है
- ▶ तीसरे साल में, 7,000 रुपये/माह, और यह इसी तरह आगे बढ़ता है।
- ▶ धीरे-धीरे बढ़ती एसआईपी आपकी बढ़ती सैलरी के साथ मेल खाती है। जैसे-जैसे आपका वेतन बढ़ता है, आपका निवेश भी बढ़ता है और आपकी जेब भर भी एकसाथ ज्यादा बोझ नहीं पड़ता।

## स्टेप-अप एसआईपी बेहतरीन तरीका

स्टेप-अप एसआईपी यह सुनिश्चित करने का एक आसान, लेकिन असरदार तरीका है कि आपका निवेश आपकी जिंदगी की गति के साथ आगे बढ़े। जैसे-जैसे आपकी आमदनी और जरूरतें बढ़ती हैं आप अपनी एसआईपी को बढ़ाकर नए सपनों और आर्थिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होंगे। तो, क्या आप निवेश का सही कदम उठाने के लिए तैयार हैं?

## ऐसे तैयार करें निवेश की रणनीति

**विविधीकरण:** विविधीकरण एक महत्वपूर्ण निवेश रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश को विभिन्न परिसंपत्तियों में फैलाते हैं, जैसे कि शेयर, बॉन्ड, रियल एस्टेट, और अन्य। इससे जोखिम कम होता है और रिटर्न बढ़ सकता है।  
**लंबी अवधि का निवेश:** लंबी अवधि का निवेश एक अच्छी रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश को लंबी अवधि के लिए रखते हैं। इससे आपको बाजार की अस्थिरता से बचने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।  
**नियमित निवेश:** नियमित निवेश एक अच्छी रणनीति है जिसमें आप नियमित रूप से एक निश्चित राशि निवेश करते हैं। इससे आपको बाजार की अस्थिरता से बचने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।  
**जोखिम प्रबंधन:** जोखिम प्रबंधन एक महत्वपूर्ण निवेश रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश को जोखिम को प्रबंधित करते हैं। इससे आपको अपने निवेश को सुरक्षित रखने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।  
**वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार निवेश:** वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार निवेश एक अच्छी रणनीति है जिसमें आप अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार निवेश करते हैं। इससे आपको अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।  
**निवेश की लागत को कम करना:** निवेश की लागत को कम करना एक महत्वपूर्ण रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश की लागत को कम करते हैं। इससे आपको अपने रिटर्न को बढ़ाने में मदद मिलती है।  
**नियमित रूप से पोर्टफोलियो की समीक्षा करना:** नियमित रूप से पोर्टफोलियो की समीक्षा करना एक अच्छी रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश पोर्टफोलियो की समीक्षा करते हैं और आवश्यकतानुसार बदलाव करते हैं। इससे आपको अपने निवेश को सुरक्षित रखने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।

**खबर संक्षेप**

**संजय कुमार को नियुक्त किया गया था**  
बहल। बहल पुलिस थाना प्रभारी जयभगवान का शनिवार को तबादला हो गया। उनकी जगह पर निरीक्षक संजय कुमार को नया थाना प्रभारी नियुक्त किया गया है। शनिवार को ही नए थाना प्रभारी ने अपना कार्यभार संभाल लिया है। जयभगवान को बहल से एसपी ऑफिस भिवानी भेजा गया है जबकि जुड़े थाना प्रभारी संजय को बहल के नए थाना प्रभारी का कार्यभार दिया गया है। नए प्रभारी संजय कुमार ने बताया कि उनकी प्राथमिकता रहेगी कि क्षेत्र में अपराध पर अंकुश लगाकर कानून व्यवस्था को दुरुस्त किया जाए।

**एक दिवसीय लाइफ स्किल प्रशिक्षण संपन्न**  
तोशाम। आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय तोशाम में एक दिवसीय लाइफ स्किल (एडवॉंस) प्रशिक्षण संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में विद्यालय के समस्त स्टाफ सदस्यों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के रिसॉर्सर्सन अनिल कुमार अरोड़ा, प्रवक्ता भौतिकी, ने विद्यालय में कार्यरत सभी स्टाफ सदस्यों को नयी शिक्षा नीति के अनुरूप विद्यार्थियों के कौशल को चिन्हित करके उसके कौशल को और धारादार बनाने के टिप्स दिए। इस दौरान उन्होंने बताया कि कौशल परक शिक्षा से राष्ट्र की उन्नति के मार्ग भी खुलते हैं।

**पौधरोपण कर मनाया स्थापना दिवस**

भिवानी। अधिवक्ता परिषद की भिवानी इकाई ने शनिवार को जिला बार एसोसिएशन प्रांगण में पौधरोपण कर अपना स्थापना दिवस मनाया। कार्यक्रम जिलाध्यक्ष सुमित जांगड़ा की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें जिला बार एसोसिएशन के प्रधान संदीप तंवर व सचिव विनोद मुंडालिया ने विशेष अतिथि के रूप में शिरकत की। इस अवसर पर जिला महामंत्री अमित बंसल ने बताया कि कार्यक्रम अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद के निर्देशों के अनुसार आयोजित किया।

**आज दिखेगा साल का आखिरी चंद्र ग्रहण**

भिवानी। हरियाणा ज्ञान-विज्ञान समिति के जिला अध्यक्ष जयेश सिंह और सचिव नंदकिशोर सोलंकी ने बताया है कि 7 सितंबर को साल का आखिरी चंद्र ग्रहण लगने वाला है। यह एक अद्भुत और महत्वपूर्ण खगोलीय घटना होगी, जिसे भारत समेत पूरी दुनिया देख सकेगी। उन्होंने बताया कि यह चंद्र ग्रहण 7 सितंबर की रात 8 बजकर 58 मिनट से बजे शुरू होगा तथा 8 सितंबर की सुबह 2 बजकर 25 मिनट तक चलेगा। इसकी कुल अवधि 5 घंटे 27 मिनट होगी। इस दौरान चंद्रमा गहरे लाल रंग का दिखाई देगा, जिसे ब्लड मून या कॉपर मून भी कहा जाता है।

**बीके विद्यालय में मनाया गया शिक्षक दिवस**

भवानीखेड़ा। बीके के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में 'शिक्षक दिवस' बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सर्वपल्ली राधाकृष्णण की प्रतिमा के समक्ष पुष्पार्पण करके उनके प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त की गई। इस अवसर पर विद्यालय प्राचार्य पंकज कुमार मिश्रा ने सभी को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विद्यार्थियों के लिए हर दिन शिक्षक दिवस होता है। उन्होंने कहा कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णण भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद, महान दार्शनिक और आस्थावान हिंदू विचारक थे। उनका जन्म 5 सितंबर 1888 में तमिलनाडु में हुआ।

**श्रद्धालुओं और राहगीरों को पिलाया सरबत**

चरखी दादरी। सरदार झाड़ूसिंह चौक स्थित माकेट के दुकानदारों ने मीठे जल की छबील लगाई। प्रधान डॉ. सुदेश वर्मा की अगुवाई में सभी ने चौक से गुजरने वाली भगवान श्रीगणेश विस्त्रिय यात्राओं में शामिल श्रद्धालुओं व राहगीरों को मीठा जल व शरबत पिलाया। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि नियमित अंतराल पर नगर व आसपास में होने वाले धार्मिक आयोजनों में योगदान दें।

# नेहरू पार्क में जमा गंदे पानी में पेड़-पौधे हो रहे खराब अपनी बدهाली की दास्तां बयां कर रहा शहर का नेहरू पार्क

राकेश मट्टी **भिवानी**  
पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी बंसीलाल ने करोड़ों रुपये खर्च करके शहरवासियों को पहले पार्क रूप में नेहरू पार्क की सौगात दी थी। उन्होंने गहरी जोहड़ी में मिट्टी भरवाकर उसपर नेहरू पार्क तैयार करवाया, जो शहरवासियों के सैर स्पॉट एवं स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभकारी था, जिससे शहर के सौंदर्यीकरण को भी चार चांद लगे थे। अब बरसाती पानी की निकासी नहीं होने और ठप सीवरेज व्यवस्था ने पार्क की दशा को ही बदलकर रख दिया है, अब पार्क अपनी बدهाली की दास्तां बयां कर रहा है, जिसमें दो से ढाई फुट तक पानी जमा है।



भिवानी। नेहरू पार्क में पगंडी पर जमा सीवरेज व बरसात के गंदे पानी में से निकलते बचे व पार्क में जमा सीवरेज व बरसाती पानी में डूबे बैठने के बँच।



भिवानी। जमा सीवरेज व बरसाती पानी में डूबे डस्टबिन व पेड़-पौधे।

**सुंदर फव्वारे मन को करते थे आनंदित**

नेहरू पार्क में सैर स्पॉट के लिए आए लोगों के मन को पार्क में जलती रंग बिरंगी लाइट व फव्वारे आनंदित करते थे, लेकिन काफी समय से फव्वारे नहीं चलने से शहरवासी काफी उदास थे और अब बरसाती व सीवरेज के गंदे पानी ने पार्क को व्यथा ही बदल दी। जहां पर घूमने आना दुर्गंध का महाौल और अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने जैसा है।

**पार्क में मच्छर-मक्खियों का प्रकोप**  
पार्क में गंदा पानी जमा होने से मक्खी-मच्छरों का प्रकोप फैल गया है। वैसे ही बरसाती मौसम में डेगू मलेरिया बीमारी अपने पैर पसार लेती है और मच्छरों की भरमार हो जाती है। अब लोग पार्क में घूमने आने से डरने लगे हैं। शहरवासियों अब डर सताने लगा है कि कहीं कोई जहरीला मच्छर अपने डंक से उन्हें संक्रमित न कर दे, जिससे उन्हें मलेरिया व डेगू हो जाए, जो उनकी जान जोखिम में डाल दे।

था। तत्कालीन मुख्यमंत्री चौधरी बंसीलाल ने भिवानी शहर के लोगों को बड़ी सौगात देने एवं उनके स्वास्थ्य की चिंता करते हुए जोहड़ी को आटने का काम करवाया और उसकी जगह बहुत ही सुंदर नेहरू पार्क का निर्माण करवाया। नेहरू पार्क भिवानी शहर की शान रहा, क्योंकि ये भिवानी का सबसे पहला पार्क था। अब प्रशासन की अनदेखी एवं लापरवाही के चलते पार्क में दो से ढाई फुट तक बरसाती व सीवर का गंदा पानी जमा है, जिसकारण पेड़-पौधे व फूल-बगीची सब कुछ खराब हो रहा है।

भिवानी। जमा सीवरेज व बरसाती पानी में डूबे डस्टबिन व पेड़-पौधे।

**घास जलकर हुई खराब**

एक जगह पर क्षमता से अधिक पानी जमा होने से परेशनियां भी बढ़ जाती हैं। पार्क में ज्यादा समय तक बरसाती व सीवरेज का गंदा पानी जमा होने से घास जलकर खराब हो गई है। पहले पार्क में हर तरफ हरियाली नजर आती थी, लेकिन अब पार्क में गंदा पानी ही पानी नजर आता है, जो पेड़-पौधों, फूल व घास को जलाकर खराब कर रहा है।

**कुड़ेदान व बैच हो रहे जर्जर**  
पानी जमा होने से धंसी पार्क में सैर करने के लिए आने वाले लोगों के पगंडी एवं टूटी टाइलें। खाने-पीने के सामान के रेपर व कूड़ा डालने के लिए जगह-जगह लोहे के कूड़ेदान रखे हैं, जो दो से ढाई फुट पानी में डूबकर जर्जर हो रहे हैं और टूट रहे हैं। पार्क में लोगों के बैठने के लिए बैच लगाए गए हैं, लेकिन ये भी पानी में डूबे हुए हैं।

## साइबर अपराधों से बचने के लिए सावधानी और जागरूकता बहुत जरूरी : अंकित

महिला महाविद्यालय झोझुकला में विस्तार व्याख्यान का आयोजन

हरिभूमि न्यूज **चरखी दादरी**

महिला महाविद्यालय झोझुकला में साइबर क्राइम विषय पर विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया, जिसमें मुख्य वक्ता की भूमिका सहायक उच निरीक्षक अंकित कुमार ने निभाई। उन्होंने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए बताया कि हम किस प्रकार साइबर अपराधों को कम करने में अपना सहयोग दे सकते हैं तथा अपनी सुरक्षा कर सकते हैं। साइबर अपराध में दोषी पाए जाने पर कैसे खुद का बचाव कर



सकते हैं पर विस्तार से छात्राओं को समझाया। प्रबन्धक समिति के प्रधान एडवोकेट सुरेन्द्रपाल सिंह ने मुख्य वक्ता अंकित कुमार को उनके विस्तार व्याख्यान के माध्यम में छात्राओं को जागरूक पर आभार जताया। उन्होंने बताया कि आज डिजिटल युग में हम न चाहते हुए भी अनजाने में साइबर अपराधों में फंस रहे हैं, इनसे सुरक्षित रहने के लिए सावधानी एवं जागरूकता बहुत जरूरी है, जिससे हम और दूसरे को भी सुरक्षित रख सकते हैं। इस अवसर पर डॉ. मुन्नी चौधरी, डॉ. मन्जीत कुमारी, डॉ. सुमित्रा कुमारी तथा छात्राएं उपस्थित रही।

## अलखपुरा की बेटियों ने यूपी की ओर से खेलते हुए जीता गोल्ड

भवानीखेड़ा। ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन के बैनर तले खेली गई सब जूनियर नेशनल फुटबॉल चैंपियनशिप छत्तीसगढ़ के नारायण पुर में आयोजित हुई, जिसमें उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए मिनी बाजील कहे जाने वाले खंड भवानी खेड़ा के गांव अलखपुरा (सेठ छञ्जूराम) की छः बेटियों ने गरिमा जाखड़, रीतिका जाखड़, कनिका जाखड़, वर्षा मीठरवाला, कीर्ति राय, नेहा यादव ने राष्ट्रीय सब जूनियर फुटबॉल प्रतियोगिता में अपना शानदार प्रदर्शन करते हुए पहले मैच में अंडमान निकोबार को 16-0 से, दूसरे मैच में पाँडिचेरी से 10-0 से विजय हासिल करते हुए, सेमीफाइनल मैच में तेलंगाना टीम को 4-1 से जीतकर, फाइनल मैच केरल को 2-1 से पराजित किया, टूर्नामेंट में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए गरिमा जाखड़ को टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया। गांव में पहुंचने पर सभी खिलाड़ी बेटियों का वाग्व्यवस्था व उपस्थित खेल प्रेमियों द्वारा विलगी जूतूस निकालकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर अलखपुरा तालब के प्रधान सुरेश जाखड़, राजदीप सरपंच, सोमदत्त, राजेश हवलदार बडसरा, मनदीप जाखड़, प्रकाश मास्टर, मनीष लाम्बा, बनीला, कोच सोनिका बिजारनीया, गोरधन पीटीआई सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं खिलाड़ी, महिला उपस्थित रहे।



राजीव गांधी राजकीय महिला महाविद्यालय में 11 सप्ताह के लिए चल रहे स्वच्छता अभियान की श्रृंखला के अंतर्गत दूसरे सप्ताह में स्वच्छ भारत अभियान की गतिविधियां सुनिश्चित की गईं। महाविद्यालय के प्रोफेसर भीष्म नारायण, डॉ. नवनीत सिंह तथा एनसीसी एएनओ डॉ. सविता, प्रोफेसर अजीत कुमार, प्रोफेसर अमित कुमार सहित अन्य शिक्षक भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

## विद्यार्थियों ने निकाली जागरूकता रैली

लोहारू। पीएमश्री राजकीय कन्या वमा विद्यालय विद्यार्थियों ने स्वच्छता पखवाड़े के तहत जन चेतना रैली निकालकर लोगों को स्वच्छता के लिए प्रेरित किया। वहीं विद्यार्थियों ने बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट स्पर्धा में भाग लेकर अनेक सुंदर सजावटी सामान बनाए। प्राचार्य दर्शना कुमारी के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। स्वच्छता पखवाड़ा ईंचार्ज प्रतिभा ने प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसमें विद्यार्थियों ने बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट से सजावटी सामान बनाया। कार्यक्रम का लक्ष्य खराब, बेकार वस्तुओं से सुंदर-सुंदर सजावटी चीज बनाकर घर व स्कूल को सजाने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करना है। चार्ट मॅकिंग प्रतियोगिता से नो प्लास्टिक का संदेश दिया।

हरिभूमि न्यूज **भिवानी**

हरियाणा राजपूत प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान पद पर गांव लोहारी जाट निवासी विरेंद्र सिंह निर्विरोध चुने गए हैं। उनके निर्विरोध की घोषणा सभा की तरफ से गठित चुनावी कमेटी की तरफ से की गई। उसके बाद यहां भिवानी में स्वागत किया गया। बाद में नवनि्युक्त उपाध्यक्ष अपने पैतृक गांव लोहारी जाट पहुंचे तो उनका गांव के लोगों ने फूलों की माला पहना कर सम्मानित किया। इस दौरान लोगों ने विरेंद्र सिंह के उपाध्यक्ष बनने की खुशी में एक दूसरे का मुंह भी मीठा करवाया। इससे पूर्व नवनि्युक्त उपाध्यक्ष विरेंद्र सिंह ने बाबा जगन्नाथ मंदिर पहुंचकर माथा टेका और विश्व शांति की कामना की।

## तंवर बने राजपूत सभा के उपप्रधान



भिवानी। नवनि्युक्त उपप्रधान को पगड़ी बांधकर सम्मानित करते हुए।

## ब्रजपाल सिंह वरिष्ठ उपाध्यक्ष बने

इनके अलावा गांव बौद निवासी ब्रजपाल सिंह परमार को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कंवर सिंह खरक को महामंत्री तथा प्रेम सिंह तंवर को कौषाध्यक्ष चुना गया है। इन सभी पदों के लिए एक एक नामांकन आया था। निश्चित तिथि के बाद इनके निर्वाचित घोषित कर दिया गया। अब केवल अध्यक्ष पद के लिए ही चुनाव का आयोजन होगा। इस मौके पर परमाल, सुनील, प्रदीप, मनोज, कंवरपाल, करतार मास्टर, प्रवीण ठेकेदार, सते ठेकेदार, ठेकेदार प्रदीप, रमेश नम्बरदार, हरकेश, सरपंच मुकेश, बबलू सरपंच, सुनेख, सतबीर डिपो होल्डर, नेपाल सिंह शिक्षा बोर्ड, विनोद वर्काल, तेजा सरपंच, मीनू, सोनू व मनोज आदि मौजूद थे।

## ट्रांसपोर्ट नगर न होने की वजह से बड़े वाहनों को देर सवेर ही शहर में प्रवेश मिलता है

ट्रांसपोर्ट दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन विधायक सर्राफ ने किया संबोधित

# डेढ़ सौ एकड़ में स्थापित करवाया जाएगा ट्रांसपोर्ट नगर: विधायक

करवाई जाएगी। वे शनिवार को अंतरराष्ट्रीय ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन द्वारा आयोजित ट्रांसपोर्ट दिवस पर कार्यक्रम में लोगों को संबोधित कर रहे थे। इससे पूर्व एसोसिएशन ने भिवानी में ट्रांसपोर्ट नगर बसाने, डीजल पर जीएसटी कम करने की मांग रखी। विधायक घनश्याम सर्राफ ने कहा कि ट्रांसपोर्ट नगर स्थापित करने में देरी हुई है। उससे वाहन चालकों के लिए परेशानी जरूर बढ़ी है। उनको शहर में आने में परेशानी तो होती है। उन्होंने भरोसा

**पहले वाली जगह से शुरू होगा ओवरब्रीज**

विगत में शहर के व्यापारियों ने उनसे शिकायत की थी कि जो लोहारू रोड पर पुल बनने जा रहा है। उसकी लम्बाई बढ़ाई जा रही है। जिससे अजानमंडी का मुख्य गेट पर आठ से दस दुकानों से पुल आगे निकल रहा है। इस पर उन्होंने सांसद धर्मवीर सिंह से इस मसले पर बात की तो उन्होंने तत्काल रेलवे अधिकारियों से बात करके शहर की लोगों की समस्या बताई। रेलवे अधिकारियों ने भी तत्काल पुरानी जगह से पुल शुरू करने की बात सहमत हो गए। अब पहले जहां से रेलवे ओवरब्रीज शुरू था। उसी जगह से अब शुरू करवाया जाएगा। जिससे लोगों को फायदा होगा। इस दौरान शहर के अनेक ट्रांसपोर्ट मौजूद रहे।

दिलाया कि जल्द ही ट्रांसपोर्ट नगर बसाने की प्रक्रिया शुरू करवाई जाएगी। यहां यह बताते चले कि बड़े शहरों की तरह भिवानी में कोई भी ट्रांसपोर्ट नगर नहीं है। ट्रांसपोर्ट नगर न होने की वजह से बड़े वाहनों को देर सवेर ही शहर में प्रवेश मिल पाता है।



भिवानी। आयोजित कार्यक्रम में विधायक को सम्मानित करते हुए।



आसानी से भेजा जा सके। एक ही जगह पर सारी सुविधाएं उपलब्ध



लोहारू। गोशाला पदाधिकारियों को चेक भेंट करते पूर्वमंत्री दलाल व विधायक यादव।

## पूर्वमंत्री दलाल व विधायक ने गोशालाओं में चारे के लिए दिए सवा करोड़ रुपये के चेक

लोहारू। पूर्वमंत्री जेपी दलाल और महेंद्रगढ़ के विधायक कंवर सिंह यादव ने शुकवार को लोहारू हलके की विभिन्न गोशालाओं का दौरा किया और सरकार द्वारा गो संरक्षण एवं संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों के तहत गोशाला कमेटी को करोड़ सवा करोड़ रुपये की राशि के चेक प्रदान किए। पूर्वमंत्री दलाल व विधायक यादव ने लोहारू की गोशाला के लिए 24 लाख 45 हजार, पहाड़ी गोशाला के लिए 4.47 लाख, मंडलीकला गोशाला के लिए 8.23 लाख, बहल गोशाला के लिए 12.97 लाख, सिवानी के लिए 29.23 तथा कच्चा के लिए 14.63, गुरेरा, गैंडावाय, खेड़ा, किकवाल व नलोई की गोशालाओं के लिए भी लाखों रुपये के चेक संबोधित पदाधिकारियों को सौंपे।

### सार्वजनिक सूचना

मैं आशा सनी पत्नी स्वर्गीय श्री अशोक कुमार निवासी मोहल्ला गुरुनानकपुरा नारनौल तहसील नारनौल जिला महेंद्रगढ़ बयान करती हूँ कि मेरा बेटा शिशिर मदान और पुत्रकुल लखौना मदान मेरे कहे-सुने से बाहर है। कोई बात नहीं मानते। मैं इन दोनों को अपनी चल-अचल संपत्ति से बेदखल करती हूँ। इनसे अतिवृत्त व नशीला मेरे लेनदेन करने वाले स्वयं जिम्मेदार होंगे। मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

## बिजली सप्लाई से परेशान लोगों ने की जाम लगाने की कोशिश

हरिभूमि न्यूज नारनौल

शहर के मोहल्ला बड़ कुआं में शनिवार को बिजली समस्या को लेकर निवासियों का गुस्सा भड़क गया। करीब 25 घरों में लंबे समय से बिजली सप्लाई बाधित रहने के विरोध में लोगों ने नारनौल-दादरी स्टेट हाईवे को उपायुक्त कार्यालय के सामने जाम करने की कोशिश की, लेकिन महावीर चौकी पुलिस तुरंत मौके पर पहुंच गई। जिसके चलते जाम नहीं लगा पाए। मोहल्ला निवासियों का कहना था कि दो से तीन परिवार अपने घर के समीप से बिजली के तार गुजरने नहीं दे रहे हैं, जिसके चलते मोहल्ले के करीब 25 घरों की बिजली सप्लाई प्रभावित है।

उन्होंने आरोप लगाया कि इस समस्या को लेकर बार-बार बिजली निगम अधिकारियों से संपर्क किया गया, लेकिन समाधान नहीं हो सका। गुस्साए मोहल्ला के लोगों ने डीसी आवास के समीप नारनौल-दादरी स्टेट हाईवे पर जाम लगाना चाहा, लेकिन इसकी सूचना मिलते ही महावीर चौकी पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने लोगों को समझाकर बिजली निगम कार्यालय भेजा। इसके बाद मोहल्ला निवासियों ने बिजली निगम कार्यालय पहुंचकर एसडीओ को मांग पत्र सौंपा। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि उनकी समस्या का जल्द समाधान नहीं हुआ, तो आंदोलन करने को मजबूर होंगे।

**मनीराम पंचांग अनुसार अबकी बार 15 दिन श्राद्ध पक्ष रहेगा, चतुर्थी और पंचमी का श्राद्ध एक ही दिन 11 सितंबर गुरुवार को रहेगा**

हरिभूमि न्यूज महेंद्रगढ़

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा से पितृ पक्ष श्राद्ध का प्रारंभ माना जाता है, जो आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तक चलता है। यह कुल 16 दिनों का होता है। ज्योतिषाचार्य पंडित राहुल भारद्वाज गढ़ी ने बताया कि इस वर्ष पितृ पक्ष का आरंभ सात सितंबर रविवार से होगा और 21 सितंबर अमावस्या रविवार तक रहेगा। श्राद्ध के इन दिनों के दौरान हमारे पितृ देव पितृ लोक को छोड़कर पृथ्वी लोक पर



राहुल भारद्वाज।

आ जाते हैं। ये दिन पितरों को याद करने का विशेष समय माना गया है। इसलिए हमारा कर्तव्य बनता है कि पितरों के निमित्त जितना हो सके श्रद्धापूर्वक उनका श्राद्ध, पूजन, तर्पण, पिंडदान, हवन, जप ब्राह्मण भोजन जरूर करना चाहिए। ऐसा करने से हमारे पितृ प्रसन्न होते हैं और उनकी आत्माएं तृप्त होती हैं। इसके परिणाम स्वरूप शुभ आशीर्वाद

## आज से श्राद्ध शुरू: 15 दिन का रहेगा श्राद्ध पक्ष चतुर्थी-पंचमी का श्राद्ध एक दिन ही निकाला जाएगा

**श्राद्ध पक्ष की तिथियां**

पूर्णिमा का श्राद्ध-सात सितंबर रविवार  
एकम का श्राद्ध-आठ सितंबर सोमवार  
द्वज का श्राद्ध-नौ सितंबर मंगलवार  
तीज का श्राद्ध-दस सितंबर बुधवार  
चतुर्थी का श्राद्ध-11 सितंबर गुरुवार  
पंचमी का श्राद्ध- 11 सितंबर गुरुवार  
दोषहर 12:46 के बाद में  
छठ का श्राद्ध-12 सितंबर शुक्रवार  
सुबह 9:59 के बाद में  
सातमी का श्राद्ध-13 सितंबर शनिवार  
सुबह 7:23 के बाद

प्राप्त होता है। हमारे कुल और वंश का विकास होता है। परिवार के सदस्यों को लगे रोग और कष्ट दूर

**श्राद्ध पक्ष की तिथियां**

अष्टमी का श्राद्ध-14 सितंबर रविवार  
नौमी का श्राद्ध-15 सितंबर सोमवार  
दशमी का श्राद्ध-16 सितंबर मंगलवार  
एकादशी का श्राद्ध-17 सितंबर बुधवार  
द्वादशी का श्राद्ध-18 सितंबर गुरुवार  
त्रयोदशी का श्राद्ध-19 सितंबर शुक्रवार  
चतुर्दशी का श्राद्ध-20 सितंबर शनिवार  
अमावस्या का श्राद्ध-21 सितंबर रविवार

होते हैं। श्राद्ध पक्ष में पंचबली शास्त्रों में श्राद्ध पक्ष में पंचबलि का विधान बताया गया है, इस मतलब है कि

**गीता के सातवें अध्याय का पाठ मानकारी**

राहुल भारद्वाज गढ़ी ने बताया कि श्राद्ध पक्ष में गीता के सातवें अध्याय का पाठ किया जाता है, क्योंकि यह अध्याय पितृ मुक्ति और मोक्ष से जुड़ा है। इस अध्याय का नाम ज्ञानविज्ञान योग है। इस अध्याय का पाठ करने से पितृ दोष से मुक्ति मिल सकती है। इसलिए श्राद्ध पक्ष में जितना हो सके उतना इस अध्याय का पाठ जरूर करना चाहिए। उन्होंने बताया कि अगर खुद पाठ नहीं कर सकते तो किसी योग्य विद्वान वात्सल्य से कराना चाहिए।

सबसे पहला ग्रास या भोजन गाय के लिए निकाला जाता है, जिसे गो बलि के नाम से जाना जाता है। इसके बाद दूसरा ग्रास कुत्ते को देना चाहिए, जिसको थान बलि के कहते हैं, फिर तीसरा ग्रास कौआ, जिसे काक बलि कहते हैं। चौथा ग्रास देव बलि होता है, जिसे जल में प्रवाहित कर दें या फिर गाय को दे दें और अंतिम पांचवा ग्रास चींटियों के लिए सुनसान जगह पर रख देना चाहिए, जिसे पिपीलिकादि बलि के नाम से जाना जाता है। इसे ही पंचबली कहा जाता है।

## रेलवे स्टेशन पर कर्मचारियों को संबोधित करते हुए रेलवे यूनियन के महामंत्री मुकेश माथुर बोले

# आठवें वेतन की घोषणा तो की, लेकिन अधिसूचना अब तक नहीं, कर्मियों में रोष

■ 19 सितंबर देश में प्रत्येक रेलवे स्टेशन पर राष्ट्रव्यापी रोष प्रदर्शन किया जाएगा

हरिभूमि न्यूज नारनौल

केंद्र सरकार ने आठ महीने पहले केंद्रीय कर्मचारियों को आठवें वेतन आयोग का लाभ देने की घोषणा की थी, लेकिन अब तक इसकी अधिसूचना ही जारी नहीं की गई। इसको लेकर उन्हें सरकार की नीयत साफ नहीं लगती। इसे लागू करने के लिए कर्मचारियों को संघर्ष करना पड़ेगा। आने वाली 19 सितंबर देश में प्रत्येक रेलवे स्टेशन पर राष्ट्रव्यापी रोष प्रदर्शन किया जाएगा, जिसमें सभी कर्मचारी को बड़-चढ़कर हिस्सा लेने की



नारनौल। रेलवे कर्मचारियों को संबोधित करते हुए रेलवे यूनियन महामंत्री मुकेश माथुर व समारोह में भाग लेते रेलवे कर्मचारी।

आवश्यकता है। उक्त आह्वान नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे एंप्लॉयज यूनियन की चार डिवीजनों के महामंत्री मुकेश माथुर ने नारनौल के रेलवे स्टेशन पर आयोजित सम्मान समारोह में बतौर मुख्य वक्ता किया। माथुर चार डिवीजनों जयपुर, अजमेर, जोधपुर एवं बीकानेर डिवीजन के

महामंत्री हैं। इस समारोह की अध्यक्षता नारनौल के प्रधान दिनेश यादव ने की, जबकि विशिष्ट अतिथि रेलवे यूनियन मंडल मंत्री राकेश यादव का कर्मचारियों ने घोड़े पर बैठाकर डीजे की धुनों पर थिरकते हुए जबरदस्त गर्मजोशी से किया। डिविजनल महामंत्री माथुर

ने कहा कि गत 16 जनवरी 2025 को आठवें वेतन आयोग की घोषणा की थी, लेकिन अब इसकी अधिसूचना जारी करने में देरी की जा रही है। उन्होंने कहा कि जब केंद्र की लोकसभा एवं राज्यसभा में सरकार के पास बहुमत है और अन्य विधेयक चुटकियों में पास

**यह बोले मंडल मंत्री**

रेलवे यूनियन मंडल मंत्री कॉमरेड राकेश यादव ने कहा कि आज यहां किए गए स्वागत सम्मान से वह अभिभूत हैं। उन्हें आज फिर से दूढ़े जैसी फिलिंग करवा दी गई है। इस सम्मान का आभार जताने के लिए उनके पास शब्द नहीं हैं। उन्होंने 19 सितंबर के प्रदर्शन में कर्मचारियों से बड़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान करते हुए कहा कि हमें अपने हकों को पाने के लिए कड़े संघर्ष की जरूरत है। संगठन पहले से इसके लिए तैयार रहा है।

**ये रहे मौजूद**

इस मौके पर विनित मान, आरके यादव, आरपी जाट, राजेंद्र चेंबरमैन, अमीपाल, कामरेड बिजायिगिया, मुकेश यादव, अर्जुन गुर्जर, राजवीर सिंह नेहरा, का. सुभाष, विश्वपाल, ओपी ओला, आरके शर्मा, नरेंद्र जांगिड व अजय गुर्जर का भी फूल-मालाओं एवं पगड़ी से सम्मान किया गया। कार्यक्रम संयोजक शाखा सचिव श्याम सुंदर शर्मा ने मंत्र संवादन किया। कार्यक्रम में दिनेश यादव, राजवीर सिंह, रिटायर्ड एसएस मुनेश भार्गव, महेंद्र कुमार, मोनू, सुरेश, रामानंद शर्मा आदि समेत सैकड़ों कर्मचारी मौजूद रहे।

करके उन्हें लागू किया जा सकता है तो आठवें वेतन आयोग में देरी समझ नहीं आ रही। देरी की गई तो इसे लागू करना ही जटिल हो जाएगा, क्योंकि पहले इसकी

कमेटी गठित हो, जो कम से कम दो साल रिपोर्ट बनाने में लेगी, जिसे जनवरी 2026 से लागू करना एवं पीछे का बकाया वेतन देना सरकार के लिए मुश्किल हो जाएगा।

## जीएसटी सुधार एक दूरदर्शी नीतिगत फैसला: डॉ. अर्चना

महेंद्रगढ़। भाजपा जिला मंत्री डॉ. अर्चना ठाकुर ने कहा कि केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वस्तु एवं सेवा कर यानी जीएसटी व्यवस्था में ऐतिहासिक सुधारों को मंजूरी देकर देशवासियों को दिवाली से पहले ही एक बड़ी शौभाग्य दी है यह सुधार न केवल वन नेशन वन टैक्स की अवधारणा को मजबूत करेगा बल्कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से लगाए गए टैरिफ का मजबूती से जवाब देने वाला आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को भी सिद्ध करेगा। इन सुधारों में छोटे और मध्यम व्यवसायों के लिए अनुपालन प्रक्रिया को अत्यंत सरल बनाया गया है कई आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं पर कर की दरों में कमी की गई है तथा जीएसटी रिटर्न दाखिल करने की प्रक्रिया को और सुगम एवं त्रिटीशन बनाने के लिए तकनीकी उन्नयन पर जोर दिया गया है इससे व्यवसायियों का अनुपालन का बोझ कम होगा और उन्हें अपने कारोबारों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलेगी डॉ. अर्चना ठाकुर ने कहा कि यह निर्णय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जल कल्याणकारी नीतियों की एक और सशक्त मिसाल है यह जीएसटी सुधार देश के छोटे बुकानदार व्यापारी और उद्योगपति सभी के लिए एक पर्व दीपावली उपहार के समान है इससे वह लोकल फार और लोकल और स्वदेशी के संकल्प को बल मिलेगा और देश का स्थानीय उद्योग भी निर्णय क्षेत्र और अधिक मजबूत होगा जिला मंत्री ने कहा कि जीएसटी के यह बदलाव देश की अर्थव्यवस्था को नई गति प्रदान करेंगे।



## सैदपुर में आसमानी बिजली गिरने से बिजली उपकरण जले व मकान में दरा

मंडी अटेली। शनिवार की सवेरे लगभग पांच बजे तेज गर्जना और बारिश के साथ आसमानी बिजली गिरने से सैदपुर गांव में कई घरों को भारी नुकसान हुआ। सुरेश स्वामी, रामकुमार, सुबेसिंह सहित आसपास के अन्य ग्रामीणों के मकानों में बिजली गिरने से बिजली के उपकरण जल गए दीवारों और छतों में दरारें आ गई तथा लेंटर भी क्षतिग्रस्त हो गए। इसी दौरान बिजली इतनी तेज गिरी कि आसपास के कई घरों की बिजली लाइनें प्रभावित हो गईं। घरों में लगे पंखे, फ्रिज, टीवी, इनवर्टर सहित अन्य उपकरण जल गए। कई जगह दीवारों और छतों में बड़ी दरारें देखी गईं। सुरेश स्वामी ने बताया बिजली गिरते ही घर में लगे उपकरण झटके के साथ बंद हो गए और कई जगह से धुआं निकलने लगा। दीवारों में दरार आ गई है।



# Ujala Cygnus

## HEALTHCARE SERVICES

(an Amar Ujala Group Collaboration)



**ECHS**



**ESIC**



**आयुष्मान भारत PM-JAY**



**हरियाणा नर्वर्नमेंट**

सभी मुख्य टीपीए के पैनेल पर कैशलेस इलाज उपलब्ध है।

स्वास्थ्य की सर्वोत्तम देखभाल अब आपके पास!

हमारी अनुभवी चिकित्सकों की टीम और अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ, हम आपकी सेहत की हर आवश्यकता को पूरा करते हैं।

## हरिभूमि

अखबार के 30वें स्थापना दिवस की

# हार्दिक शुभकामनायें

**उपलब्ध विभाग**

- न्यूरो व स्पाईन विभाग
- हृदय रोग विभाग
- पेट, आंत व लिवर विभाग
- हड्डी एवं जोड़ रोग विभाग
- स्त्री एवं प्रसूति विभाग
- सामान्य एवं लैप्रोस्कोपिक सर्जरी विभाग
- नवजात शिशु एवं बाल रोग
- श्वास एवं फेफड़ा रोग विभाग
- सामान्य रोग विभाग
- मूत्र एवं गदूद विभाग
- फिजियोथेरेपी
- आहार विशेषज्ञ विभाग

उपलब्ध सुविधाएं

कैथ लैब, पैथ लैब, अल्ट्रासाउंड, एक्स-रे, सीटी-स्कैन, ICU, CCU, NICU, फार्मसी 24x7, एम्बुलेंस 24x7, मॉड्यूलर ओटी, कैटीन

इको, टीएमटी, एंडोस्कोपी, ईआरसीपी, फाइब्रोस्कोपी, एमआरसीपी, आर्थोस्कोपी, घुटना एवं कूल्हा बदलना, जटिल रीढ़ और न्यूरोसर्जरी

अब हरियाणा सरकार के कर्मचारियों के लिए कैशलेस ईलाज

# उजाला सिग्नस सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल

नजदीक सरकारी अस्पताल, बी.एस.एन.एल. ऑफिस के साईड में, रेवाड़ी-123401 (रेवाड़ी)

HELPLINE NO. ☎ 7082216838

# जब कोई अपना हो परेशान-तनावग्रस्त कुछ देर रहने दें उसे अपने मन के साथ

हम सभी के जीवन में परेशानियाँ और तनाव के क्षण आते रहते हैं। ऐसे में कुछ लोग दूसरों से सलाह लेने में असहज महसूस करते हैं, वे नहीं चाहते कि उनसे कोई सवाल पूछा जाए। वे कुछ समय तक अपने मन के साथ एकांत रहना चाहते हैं। इस कंडीशन में हमें अपने अजीब की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।

हरदम कुछ पछूते रहने के बर्ताव पर लगाम लगाने की जरूरत को रेखांकित करती हैं। समझना आवश्यक है कि उलझाऊ हालातों में, क्या चल रहा है? कैसा चल रहा है? कैसे हो? खुश क्यों नहीं दिखते हो? या टेंशनफ्री होने-रहने का प्रयास करो। जैसी सलाहों और सवालों का दोहराव हमारे दिमाग की मुश्किलों को और बढ़ा देता है। पहले से ही तकलीफ के घेरे में आए मन को और पीड़ा देने लगता है। उगमगाते मन से जूझते युवा और संशुद्ध हो जाते हैं। अपने ही जीवन की दिशा को लेकर घबरेने वाली ये शंकाएं-आशंकाएं और भटकने वाली साबित होती हैं। साथ ही मन में आक्रोश भी उपजने लगता है, कभी खुद के प्रति तो कभी उन अपनों-परायों को लेकर, जो बिना मांगी सलाहें देते हैं। हर समय सवाल पूछते हैं। सही गाइडेंस की जरूरत बताते हुए पहले से ही उलझे-बिखरे दिलो-दिमाग को और भटकाते हैं। ऐसे दौर में किसी भी इंसान को थोड़ा समय देना सही रहता है। समस्याओं से जूझ रहा इंसान चाहता है कि कोई बेवजह सवाल ना पूछे। आते-जाते तसल्ली ना दे। बात-बात में कोई नसीहत कोई राय ना मिले। ऐसी बातें और बर्ताव मददगार बनने के बजाय मनोभावों को और उलझाते हैं।

बताना चाहते। ऐसी परिस्थितियों में कोई गाइडलाइन देने के बजाय गंभीरता से उनकी मन-स्थिति को समझना एक अच्छा तरीका है। बेहतर महसूस करने के बाद वे स्वयं आपसे अपनी बात साझा करने की सोचेंगे। अगर नहीं तो यह उनका अधिकार है कि वे कितना और क्या दूसरों को बताना चाहते हैं? युवा पीढ़ी अपने निजी जीवन में दूसरों की ताक-झांक को ज्यादा पसंद नहीं करती। ऐसे में समझना आवश्यक है कि आपका संवाद



एकतरफा तो नहीं। आपके सवाल बहुत अधिक पर्सनल हुए तो अगले इंसान को असहज ही करेगा। साथ ही बिना मांगी सलाह भी दूसरे के लिए भार और तनाव का कारण बन सकती है।

## समझें तनावग्रस्त व्यक्ति की मनोदशा

आज के दौर में अधिकांश लोग जो कुछ भी अपनों-परायों, परिचितों-अपरिचितों से साझा करना चाहते हैं, वह वर्चुअल दुनिया में मौजूद होता है। ऐसे में निजी समस्याओं को खुद तक रखकर अपनी प्राइवसी चाहने वालों को परेशान करना सही नहीं होता है। देखा जाए तो कई बार निजी संबंधों में दूरियां आने की बड़ी वजह जरूरत से अधिक ऐसी दखलंदाजी भी होती है। ठीक जस्टिन की तरह ही किसी को यह कहना कि 'मेरी तरह रहे, मेरे जैसे बनो या इस हाल में यह करो, वह करो।' किसी भी व्यक्ति, खासकर युवाओं को नहीं भाता। ऐसा व्यवहार जीवन में दूरियां और मन में शिकायतें बढ़ाता है। खासकर जब यह पता ही ना हो कि अगला इंसान किन हालातों से जूझ रहा है। कुछ बातों पर गौर करते हुए उसकी मनोदशा को समझना का प्रयास करना उचित है। आपसे जुड़ा इंसान अगर आई कॉन्टैक्ट किए बिना बात करे, आते-जाते बचकर निकलने की सोचे, पछने पर कुछ भी स्पष्ट कहने से बचे या शब्दों को घुमा-फिराकर अपनी बात रखे तो समझ जाइए कि वह अपनी परिस्थिति और मन-स्थिति को बताने में सहज नहीं है। कुछ समय के लिए ऐसे लोगों को उनके हाल पर छोड़ देना चाहिए। उनके दिलो-दिमाग को रिकवर होने का वक्त मिलना ही चाहिए। आगे सही समय देखकर उनके साथ संवाद की राह बनानी चाहिए। \*



बजाय जांच-पड़ताल करते रहने का व्यवहार मन को ठेस पहुंचाता है। इसीलिए जान-पहचान वाले घर में किसी व्यक्ति की नौकरी छूट जाए। उम्मीद के मुताबिक परीक्षा का परिणाम ना आए। रिश्ते-नाते टूट जाएं या कोई हारी-बीमारी घेर ले तो ऐसे में उनकी निजता का सम्मान करना जरूरी है। आमना-सामना होने पर असहज महसूस करवाने वाले प्रश्नों के बजाय संभलने का समय देना चाहिए। बहुत से लोग दूसरों से अपना सब कुछ नहीं



यह सही है कि तकनीक और आधुनिक महानगरीय जीवनशैली ने बेहतर सुविधाएं प्रदान की हैं। लेकिन इन पर आश्रित होकर हृद से अधिक आलसी या निष्क्रिय बने रहना आपको शारीरिक, मानसिक रूप से बीमार बनाने के साथ ही सामाजिक रूप से एकाकी भी कर सकता है।

## सही नहीं हृद से अधिक निष्क्रियता

लाइफस्टाइल / चैतन्य

हाल ही में सोशल मीडिया पर एक पोर्टल डिलीवरी एजेंट का वीडियो वायरल हुआ। वीडियो में उसने बताया कि उसे दो मिनट की दूरी पर पार्सल पहुंचाने का ऑर्डर आया। इसके लिए डिलीवरी एजेंट ने हंसी-मजाक के सहज अंदाज में ग्राहक को आलसी कहा। स्वयं पोर्टल डिलीवरी एजेंट द्वारा बनाए गए वीडियो में वह बताया है कि ऑर्डर एक ही अपार्टमेंट के टॉवर सी से उठाकर टॉवर ई में देना था। यह दूरी इतनी कम थी कि पैदल चलकर सिर्फ दो मिनट में तय की जा सकती थी। यही वजह है कि डिलीवरी एजेंट मजाकिया लहजे में कहता है कि 'ये लोग इतने आलसी हैं कि सिर्फ एक बिल्डिंग से दूसरी बिल्डिंग में सामान पहुंचाने के लिए भी खुद नहीं चल सकते, इसके लिए भी पोर्टल बुक कर रहे हैं।' देखा जाए तो यह वाक्या हंसकर टाल देने भर का लगता है। गंभीरता से सोचा जाए तो हमारी बदलती जीवनशैली और दूसरों पर बढ़ती निर्भरता की कड़वी सच्चाई से रूबरू

निर्भरता की अति के नुकसान: व्यस्त जीवनशैली, तकनीकी विस्तार और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की बढ़ती पहुंच के चलते ऐसी बहुत सी सुविधाओं पर डिपेंडेंसी बढ़ी है। व्यस्तता के साथ-साथ एक पहलू यह भी है कि अपने-अपने कोजी कॉर्नर में बैठे लोग अब सब्जी तक लेने घर से बाहर नहीं जाना चाहते। क्लिक भर में ऑर्डर कर फ्री हो जाने का काम सुविधाजनक लगने लगा है। अफसोस कि यह स्थिति शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य पर तो नेगेटिव असर डालती ही है, सामाजिक फ्रंट पर भी इसके कई नुकसान हैं। फूड डिलीवरी एप्स के जरिए दस मिनट में कुछ भी मंगा लेने की सुविधा लोगों में हरदम कुछ ना कुछ खाते रहने की आदत भी डाल रही है। बहुत से लोगों को ऑनलाइन शॉपिंग की लत लग रही है। अनचाहा सामान भी ऑर्डर किया जा रहा है। देखा जाए तो यह स्थिति साइकोलॉजिकल निर्भरता बढ़ने से जुड़ा पहलू भी लिए है। जिसका मेंटल हेल्थ पर भी बुरा असर पड़ता है। धीरे-धीरे आलस के कारण हर तरह की रचनात्मकता और सक्रियता भी खत्म होने लगती है। चिंता, अवसाद और तनाव जैसी प्रॉब्लम जड़ें जमाने लगती हैं। सब कुछ घर बैठे ऑर्डर कर देने की आदत हो जाए तो सामाजिक गतिविधियों में भी भागीदारी कम होने लगती है। इसीलिए इस तरह की डिपेंडेंसी को सीमा तय करना आवश्यक है।



किसी बहाने बने रहें सक्रिय: कोई भी सुविधा जब आदत बनकर हृद से ज्यादा निर्भर बनाने लगे तो चेतना चाहिए। जरूरत से ज्यादा निर्भर होना केवल सुविधा का लाभ लेना भर बल्कि अपनी क्षमताएं खो देने के हालात पैदा करता है। इसीलिए सक्रिय बने रहना जरूरी है। अपने काम-काज निपटाने के लिए एक्टिव रहना शारीरिक ही नहीं मानसिक और सामाजिक रूप से सक्रिय रहने से भी जुड़ा है। आस-पास के बाजार तक जाना या आस-पड़ोस के किसी घर में कोई सामान लेने या पहुंचाने जाना इंसानी जीवन का सहज हिस्सा रहा है। इन एक्टिविटीज से सामाजिक संबंध बनते हैं। एक्टिव रहने के बहाने तलाशिए। हर काम के लिए उपलब्ध सुविधाओं के इस दौर में खुद को निष्क्रियता से बचाने के लिए खास कोशिशें करने की दरकार है। \*

## कवर स्टोरी

डॉ. मोनिका शर्मा

बी दे दिनों मशहूर कैनेडियन सिंगर जस्टिन बीबर ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट इंस्टाग्राम पर खुलासा किया कि वह टूट चुके हैं। गुस्से की समस्या से जूझ रहे हैं। जस्टिन ने अपनी मानसिक सेहत को लेकर भी चिंता जताई। दुनिया भर में मशहूर इस सिंगर ने अपनी पोस्ट में लिखा कि 'लोग मुझे ठीक होने के लिए कहते रहते हैं। क्या आपको नहीं लगता कि अगर मैं खुद को ठीक कर सकता, तो मैं पहले ही कर चुका होता? मुझे पता है कि मैं टूट चुका हूँ। मुझे पता है कि मुझे गुस्से की समस्या है। मैंने अपनी पूरी जिंदगी उन लोगों की तरह बनने की कोशिश की, जो मुझे कहते रहे कि मुझे उनके जैसा ठीक होना चाहिए। यही बात मुझे और ज्यादा थका देती है, ज्यादा गुस्सा दिलाती है।' अपनी एक दूसरी पोस्ट में जस्टिन यह भी कह चुके हैं कि 'मुझे यह पृष्ठना बंद करो कि मैं ठीक हूँ या नहीं। मुझे यह पृष्ठना भी बंद करो कि मैं कैसा हूँ? क्या कर रहा हूँ? मैं जानता हूँ कि हम सभी के लिए जीवन कठिन है। आइए हम अपने लोगों को प्रोत्साहित करें, न कि अपनी सुरक्षाओं को एक-दूसरे पर प्रोजेक्ट करें। हर बार आपकी चिंता देखभाल के रूप में सामने नहीं आती है। यह सिर्फ अजीब रूप से ऑप्रेसिव यानी चिंता और तकलीफ थोपने वाली भी हो सकती है।'

## उचित नहीं ज्यादा सवाल-सलाह

असल में जस्टिन के विचार आम लोगों के लिए भी सार्थक सलाह लिए हैं। इस युवा और चर्चित चेहरे की बातें किसी अपने-पराए के जीवन में आई हेरान-परेशान करने वाली परिस्थितियों में

## इमोशंस / अंतरा पटल

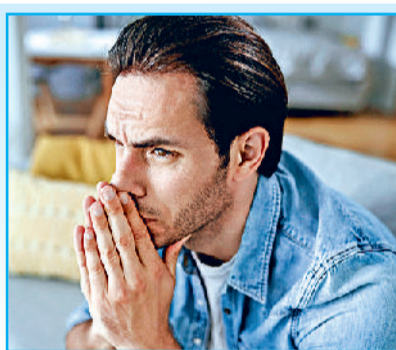
कई लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें आसानी से रोना नहीं आता है। उनके किसी रिलेटिव या करीबी की डेथ हो जाए तब भी नहीं रोते। जब उनका कोई अपमान हो जाए या उन्हें गहरा सदमा लगे या कोई गंभीर नुकसान हो जाए वे तब भी नहीं रोते। जिन अवसरों जैसे-अंतिम संस्कार, विदाई या भावनात्मक फिल्म देखते हुए, जब अधिकतर लोग रोते हैं, उन पर भी उनके आंसू नहीं छलकते। हालांकि उनकी आंखों में आंसू होते हैं, लेकिन वो आंखों से छलकते नहीं। तो क्या इससे यह साबित होता है वे भावनाशून्य इंसान होते हैं? शायद ऐसे ही कठोर या कर्हें मजबूत मन वाले लोगों के लिए सुदर्शन फाकिर ने यह शेर कहा है, 'आप कहते थे कि रोने से न बदलेंगे नसीब/उम्र भर आपकी इस बात ने रोने न दिया।' इनसे उलट कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो अपनी भावनाओं को, आंसुओं को छिपाते नहीं हैं। जैसे एक बार टैनिस स्टार अमांडा अनिसिमोवा

आमतौर पर आंसू बहाने को कमजोरी की निशानी और न रोने वाले को कठोर हृदयी मान लिया जाता है। लेकिन वास्तव में आंसू केवल मन की अमिष्यवित होते हैं, जो कई बार हमारे मन का उपचार भी करते हैं।

## आंसुओं से बयां होती है मन की सच्ची हकीकत

विंबलडन फाइनल में हारने के बाद सबसे सामने फूट-फूट कर रो पड़ी थीं। सैंकड़ों लोगों और कैमरों के जरिए पूरी दुनिया के सामने भी उन्होंने अपने आंसुओं को रोकने का प्रयास नहीं किया और न ही चेहरे पर दिखावटी मुस्कान लाने की कोई कोशिश की थी। कुछ लोगों को उनका ऐसे रोना, अजीब या कर्हें अनुचित लगा। लेकिन वास्तव में देखा जाए तो अमांडा के रोने में सच्चाई

थी और बहादुरी भी। वास्तव में सबसे सामने रोने वालों और न रोने वालों को लेकर समाज में अलग-अलग तरह की राय रखी जाती है। मानते हैं कमजोरी का लक्षण: आमतौर पर रोने को, कमजोरी या अत्यधिक भावुकता या नियंत्रण के खोने से जोड़ते हैं। विशेषकर पुरुषों के संदर्भ में कहा जाता है कि 'मर्द रोते नहीं हैं।' बचपन में जब कोई लड़का रोता है तो उससे कहा जाता है,



'लड़कियों की तरह रोना बंद करो।' रोने को लड़कियों का एक्सक्लूसिव गुण मान लिया गया है। ऐसे जुमले केवल लड़कों या पुरुषों को नीचा दिखाने के लिए ही नहीं बल्कि लड़कियों या स्त्रियों का भी अपमान है। घर और स्कूल में बच्चों की इस सोच के साथ परवरिश की जाती है कि संयम (या बर्दाश्त) का अर्थ ताकत है और आंसू बहाना, कमजोरी या अस्थिरता की निशानी है।

गम-खुशी में छलकते हैं आंसू: वास्तव में रोना हमारी सोच और धारणा से कर्हें अधिक जटिल है। यकीनन दुःख (जो किसी के निधन पर होता है) रोने का सबसे आम कारण है। लेकिन लोग कुंठा, पीड़ा, असफलता या भयंकर अपमान के कारण भी रोते हैं। इसी के साथ खुशी के आंसुओं को कैसे अनदेखा किया जा सकता है? शतरंज का विश्व कप (महिला) जीतने के बाद दिव्या देशमुख खुशी से रो पड़ी थीं। हालांकि वह जब पिछली प्रतियोगिता में हार गई थीं, तब नहीं रोई थीं, लेकिन विजयी होने पर रोईं। अक्सर राहत, बड़ी सफलता, अत्यधिक खुशी भी दुःख जितना ही हमें भाव-विभोर कर देती है। बड़े-बड़े नेता, कलाकार, खिलाड़ी सार्वजनिक मंच पर रो पड़ते हैं। असम के बाद पीड़ितों का हाल सुनाते हुए हेम बरुआ संसद में रोए थे। अपनी फेयरवेल स्पीच देते हुए क्रिकेटर राहुल द्रविड रोए थे। आंसुओं ने इन लोगों को छोटा नहीं कर दिया। आंसुओं ने उन्हें अधिक संवेदनशील मनुष्य और भावनाओं से जुड़ा हुआ साबित किया।

मन का उपचार करे आंसू: रोना दवा की तरह भी काम करता है। बड़े-बुजुर्ग कहते हैं कि रोने से गम हल्का हो जाता है। चिकित्सा विज्ञान भी यही कहता है, भावनात्मक आंसुओं में स्ट्रेस हॉर्मोन होते हैं। रोने से तनाव कम हो जाता है, नर्वस सिस्टम को आराम मिलता है और राहत का अहसास होता है। इसलिए लोग कहते हैं, 'रोने के बाद हल्का महसूस हो रहा है।' जापान में तो रोने के लिए क्लब भी बने हैं, जहां लोग साथ रोने के लिए एकत्र होते हैं। इस प्रथा को 'रू-कत्सु' (आंसुओं की लालाश) कहते हैं। कहने का सार है कि हमें आंसुओं को कमजोरी की निशानी के तौर पर नहीं देखना चाहिए कि व्यक्ति ने अपने ऊपर का नियंत्रण खो दिया है। बल्कि यह समझना चाहिए कि आंसू व्यक्ति की सच्ची अभिव्यक्ति है। आज जब हम सब दिखावे के युग में जी रहे हैं, बनावटी सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों पर। ऐसे संसार में सच्चे आंसू ही इंसान की सच्ची अभिव्यक्ति है, जो साबित करते हैं कि हम इंसान हैं। \*

## गीत / कृष्ण बिहारी

### क्या लिखोगे



देवता बनकर दिखोगे, क्या लिखोगे?  
देवता बनकर लिखोगे, क्या लिखोगे?  
सादगी से पूर्ण रचना एक भी तो जन नहीं पाए,  
सय करूं तो आदमी भी इसलिए तुम बन नहीं पाए।  
खोजकर अमृत पियोगे, क्या लिखोगे?  
देवता बनकर दिखोगे, क्या लिखोगे?  
जो अर्धनिष्क एक घातक विष पिएगा वह रवेगा,  
छटपटाई गौत मरकर जो जिएगा वह बवेगा।  
तुम शहीदाना प्रियोगे, क्या लिखोगे?  
देवता बनकर लिखोगे, क्या लिखोगे?  
करो कागजों पर तुमने बस थिडिया उड़ाई है,  
अबतलक समझे नहीं यह भी कि झूठी कमाई है।  
रदियों जैसे बिकोगे, क्या लिखोगे?  
देवता बनकर लिखोगे, क्या लिखोगे?

## व्यंग्य

केदार शर्मा

वैश्विक स्तर पर भारत डेटा उपयोग में दुनिया का नंबर एक देश बना हुआ है, यह समाचार अखबार में पढ़कर गर्व से मस्तक ऊंचा हो गया। दरअसल डेटा, स्क्रीन पर चलने वाली समस्त गतिविधियों का ईंधन है। अगर डेटा न हो तो स्क्रीन की हालत धोबी के कुत्ते जैसी हो जाए, जो न घर का रहता, न घाट का। इस समय डेटा का थोक में उपयोग सबसे लोकप्रिय गतिविधि रील बनाने और देखने में भरपूर हो रहा है। धीरे-धीरे ऐसे लोगों की संख्या में इजाफा होता जा रहा है, जिनके लिए रील अगर शमा है, तो वे उसके परवाने हैं। रील ही इनका धर्म, कर्म और मर्म हैं, जान है, मान है और सम्मान है। जिनका श्रम, समय और डेटा, सब कुछ रीलों पर कुर्बान है। सुबह बिस्तर से उठने से लेकर रात को सोने तक ये रील-रानी के संग ही उठते-बैठते हैं। कई बार तो हैरतअंगेज रीलों देखकर दांतों तले अंगुली दब जाती है। प्री-वेडिंग शूटिंग में वर-वधु के बकरा-बकरी की आवाज निकाल कर उनके पोज में एक-दूसरे को प्रोपोज करते हुए, क्लास रूम में डांस करती शिक्षिका की, गधे पर उल्टा बैठकर वीडियो वाली टाइप, एक से बढ़कर

धीरे-धीरे ऐसे लोगों की संख्या में इजाफा होता जा रहा है, जिनके लिए रील अगर शमा है, तो वे उसके परवाने हैं। रील ही इनका धर्म, कर्म और मर्म है, जान है, मान है और सम्मान है। जिनका श्रम, समय और डेटा, सब कुछ रीलों पर कुर्बान है।

## रील की झील में डूबते लोग



एक अनगिनत रीलों इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब और फेसबुक के आकाश में बरोक-टोक पतंगों की तरह मंडरा रही हैं। अभिव्यक्ति की बेलगाम, बेकाबू असीम और स्वच्छंद आजादी के एक साथ यहां दर्शन होते हैं। इनमें से ही कुछ लोग रील देखते-देखते रील बनाने में उस्ताद बन गए हैं। वे ही इनके प्रोड्यूसर हैं और वे ही कैमरामैन। खत

माया के दर्शन कराने और कमर लचकाने की। रीलों ने हर हाथ और हर आंख को काम धमा रखा है। अगर कोई रील खूब वायरल हो गई, तो कमाई भी बल्ले-बल्ले होती है। रीलों की इस दुनिया के आगे 'रीयल' दुनिया फीकी, नीरस और बेमजा लगने लगी है। संस्कारों की दुनिया में भले ही मंदा हो, पर रीलों के सितारों पर बुलंदी है। संस्कारों की थाली भले ही खाली हो, पर रीलों की थाली नित नए मसालेदार 'व्यंजनों' से मालामाल है।

यह कहना बहुत मुश्किल है कि रील को हम बना रहे हैं या रील हमें बना रही है। रील को हम चला रहे हैं या रील हमें चला रही है। एक बार बिना सेंसर की इस गाड़ी में बैठने के बाद दलान पर लुढ़काती हुई हमें कहाँ ले जाकर छोड़ेगी, भगवान ही मालिक है। कर्हें हम रील युग में तो प्रवेश नहीं कर रहे हैं? कुछ भी हो बिना विवेक का इस्तेमाल किए इसमें सफर करने की लत लग गई तो गत का बिगड़ना सुनिश्चित है। रील की इस झील में जो एक बार डूबता है तो बस डूबता ही चला जाता है। रील देखने और बनाने की दीवानगी इस कदर हर उम्र और वर्ग के लोगों पर हावी है कि जैसे उन्हें अपने आस-पास किसी की सुध-बुध ही नहीं रहती, जैसे उनका पूरा अस्तित्व स्मार्टफोन के तल पर टिका गया है। \*

## पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

### निर्बंध-उदात्त प्रेम कविताएं

तसलीमा नसरिन जो भी लिखती हैं, जो निर्बंध, भयमुक्त और विचारों का नया आयाम खोलने वाला होता है। हाल में छपकर आई उनकी प्रेम कविताओं के अनुवाद की किताब 'यदि प्यार करो' में भी उनकी लेखनी का वही तेवर देख सकते हैं। वे प्रेम को मन की गहनतम अनुभूति मानती हैं, और इन्हें अभिव्यक्त करने से परहेज नहीं करती हैं। 'जब मेरे साथ तुम नहीं होते/मेरे साथ तब तुम सबसे ज्यादा रहते हो।' और 'तुम्हें देखने पर/मन करता है, शुरू से/शुरुआत करूं जीवन की।' जैसी भावप्रवण पंक्तियों के साथ ही वे इसकी जटिलता को भी बयां करती हैं 'कौन कहता है प्रेम/कि चाहो और हो जाए'। \*

पुस्तक: यदि प्यार करो, लेखिका: तसलीमा नसरिन, अनुवाद: कल्लोल चक्रवर्ती, मूल्य: 199 रुपये, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

**अगर आपकी है**  
**रचनात्मक लेखन में रुचि**

अगर आप अपने आस-पास की बदलती दुनिया पर नजर रखते हैं। आप हटकर सोचते हैं, आपके भीतर विवेक और लेखन की क्षमता है, आप पत्रकारिता-लेखन के प्रति प्रतिबद्ध हैं, तो जुड़िए दैनिक हरिभूमि से। हमें दिल्ली में अपने **फीचर विभाग** के लिए आवश्यकता है-

► वरिष्ठ उप संपादक / उप संपादक  
► हिंदी टाइपिंग में कुशल ऑपरेटर  
► प्रशिक्षु उप संपादक  
► भी आवेदन कर सकते हैं।

रयाशीघ्र अपना बायोडाटा मेल करें-  
E-Mail: haribhoomifeaturedep@gmail.com

हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश से एक साथ प्रकाशित



अगर आप घूमने-फिरने के शौकीन हैं, साथ ही रोमांचक और साहसिक गतिविधियों में भी आपकी रुचि है, तो वाइल्डरनेस टूर यानी रोमांचक-साहसी पर्यटन, आपके लिए परफेक्ट ट्रेवल-चॉइस हो सकती है। हाल के वर्षों में इसका ट्रेंड काफी बढ़ रहा है। इस ट्रेंड और इसके फायदों पर एक नजर।

## एंज्वॉयमेंट-थेरेपी का कॉम्बो एडवेंचर ट्रेवलिंग का बढ़ता क्रेज

ट्रेवल ट्रेंड / अंशु सिंह

पर्यटकों की बदलती पसंद को देखते हुए ट्रेवल इंडस्ट्री में नित नए बदलाव होते रहते हैं। अब लोग सिर्फ घूमने-फिरने के लिए यात्रा नहीं कर रहे, बल्कि उन यात्राओं पर जाना पसंद कर रहे हैं जिसमें रोमांच के साथ थोड़ी मुश्किलों का भी सामना करना पड़ता है। यही वजह है कि इन दिनों ट्रेवल थेरेपी के तौर पर वाइल्डरनेस टूर को लोग प्राथमिकता दे रहे हैं। ट्रेवल कंपनियों भी ऐसे ट्रेवलर्स की जरूरतों का ध्यान रखते हुए साहसिक टूर पैकेज डिजाइन कर रही हैं।

**ट्रेवलिंग का नया तरीका:** जरूरी नहीं कि हर किसी को पहाड़ों पर चढ़ना, बर्फ पर स्केटिंग करना या मानसून के दौरान घने जंगलों में ट्रेकिंग करना पसंद हो। लेकिन इन दिनों ऐसी साहसिक यात्राओं को लेकर लोगों की खास दिलचस्पी देखी जा रही है। टूर एंड ट्रेवल से जुड़ी कई कंपनियां भी इस तरह के वाइल्डरनेस टूर (साहसिक यात्रा) पैकेज उपलब्ध करा रही हैं। वाइल्डरनेस टूर के दौरान टूरिस्ट को कुछ दिन या हफ्ते भर के लिए उजाड़ और बंजर इलाके में अकेले छोड़ दिया जाता है। वहां से वे खुद ही रास्ता ढूँढते हैं और बाहर निकलते हैं। टूरिस्ट वाइल्डरनेस टूर के लिए अपनी पसंद से देश या स्थान का चयन करते हैं, जैसे- कोई जंगल, रेगिस्तान, पहाड़ या ध्रुवीय इलाका आदि। पूरी दुनिया में इन दिनों ऐसी यात्राएं हो रही हैं। इनमें मंगोलिया, पेरू और आर्कटिक महासागर में नौवें का द्वीप समूह स्वालबार्ड जैसे एडवेंचर डेस्टिनेशन शामिल हैं।



कई डेस्टिनेशंस हैं मौजूद: हालांकि प्रतिकूल मौसम और दुर्गम स्थान संबंधी कारणों से आम पर्यटक इनसे बचते हैं। फिर भी एडवेंचर के शौकीन लोग इस तरह की साहसिक यात्राओं का लुप्त जरूर उठाते हैं। अपने देश में वाइल्डरनेस टूर के इच्छुक पर्यटकों के लिए अनेक ट्रेवल डेस्टिनेशंस मौजूद हैं। वे हिमालय की तलहटी में बसे दार्जिलिंग की पहाड़ियों में ट्रेकिंग ट्रिप और रॉक क्लाइंबिंग कर सकते हैं। हिमाचल की पहाड़ियों में माउंटेनियरिंग पर जा सकते हैं या फिर राजस्थान के दूर तक फैले रेगिस्तान में ऊंट की सवारी की यात्रा को रोमांचकारी बना सकते हैं। इसके अलावा, वन्यजीव यानी वाइल्डलाइफ को देखना भी भारतीय साहसिक पर्यटन का प्रमुख हिस्सा है। देश के राष्ट्रीय उद्यानों में सफारी और जीप टूर की सुविधा भी प्रदान की जाती है। वाइल्डरनेस टूर एंड ट्रेवल पैकेज में स्कीइंग, पैरालाइडिंग, कैंपिंग और स्कूबा डाइविंग जैसी गतिविधियां भी शामिल होती हैं।



कंपनियां ग्राहकों की पसंद के अनुसार, वाइल्डरनेस टूर पैकेज डिजाइन करती हैं। जैसा डेस्टिनेशन होगा, उसी अनुसार यात्रा का खर्च आएगा। विदेश की यात्रा करने पर ये खर्च लाखों में हो सकता है। जैसे, एक मशहूर ट्रेवल कंपनी ने 'गेट लॉस्ट' नाम से एक पैकेज डिजाइन किया है। इसके तहत यात्री खुद को खोजने में खो जाते हैं। दरअसल, उन्हें किसी अनजान इलाके में छोड़ दिया जाता है, जहां से उन्हें खुद ही बाहर निकलना होता है। कुछ वेसे ही जैसे 'मैन वर्सेज वाइल्ड' टीवी शो में बेयर ग्रिल्स किया करते हैं। हां, वाइल्डरनेस टूर के दौरान कंपनियां जीपीएस और सैटेलाइट ट्रैकर से अपने यात्रियों पर नजर रखती हैं, ताकि किसी परेशानी में उनकी मदद कर सकें। \*

### वाइल्डरनेस टूर के फायदे

वाइल्डरनेस ट्रेवलिंग को आज एक हीलिंग थेरेपी की तरह देखा जा रहा है। इसमें यात्री जब अकेले कठिन रास्तों से गुजरते हुए अपनी मंजिल तक पहुंचते हैं, तो उनका आत्मविश्वास कई गुणा बढ़ जाता है। इससे वे जिंदगी में आने वाली चुनौतियों का बेहतर तरीके से सामना करना सीख लेते हैं। इसमें न केवल रोमांच होता है, बल्कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। तनाव कम होने से नई ऊर्जा का अनुभव करते हैं। प्रकृति के साथ रहने से उससे रिश्ता गहरा होता है। इसमें दुनिया घूमने का मौका मिलता है। नई जगहों और संस्कृतियों को जानने से किशोरिता भी बढ़ती है।

बैंकिंग फ्रॉड से संबंधित घटनाएं आए दिन देखने-सुनने को मिलती रहती हैं। ऐसे में जरूरी है कि बैंक से संबंधित तमाम गतिविधियों के दौरान विशेष सावधानी बरती जाए। इसके लिए बैंक, एटीएम, यूपीआई और नेट बैंकिंग से संबंधित नियम जानना जरूरी है।

## जरूर जानें एटीएम-यूपीआई नेट बैंकिंग से जुड़े रूल्स



अवेयरनेस

प्रणाकांत कश्यप

इन दिनों बढ़ती आर्थिक धोखाधड़ी और बैंकिंग फ्रॉड के मद्देनजर प्रत्येक उपभोक्ता को एटीएम, यूपीआई, नेट बैंकिंग और बैंकिंग से संबंधित अन्य नियम जानने जरूरी हैं। ये नियम भारतीय रिजर्व बैंक और बैंकों की ग्राहक सुरक्षा नीति के तहत आते हैं। इन बैंकिंग नियमों की जानकारी के अभाव में आप इकोनॉमिक फ्रॉड के शिकार बन सकते हैं।

**जानें आरबीआई के नियम:** इस नियम के तहत किसी भी सरकारी या शेड्यूल्ड प्राइवेट बैंक में अगर आपके किसी खाते से कोई धोखाधड़ी हो जाती है तो आपका नुकसान पूरी तरह से बच सकता है बशर्ते इस धोखाधड़ी के तीन दिन के भीतर आप अपने बैंक को इस धोखाधड़ी की लिखित सूचना दें। अगर आप बैंक को अपने साथ हुई धोखाधड़ी की सूचना तीन दिन के भीतर न देकर चार से सात दिनों के भीतर देते हैं तो आपके सेविंग अकाउंट में 5000 से 25 हजार तक

किसी के साथ शेरार न करें। अगर कभी बैंक कर्मचारी भी इसकी मांग करता है, तो आपको उसे यह नहीं देना चाहिए, क्योंकि आरबीआई के नियम के तहत कोई बैंक कर्मचारी अपने बैंक के ग्राहकों से यूपीआई पिन नहीं मांग सकता। अगर आपको रिक्वेस्ट मनी या कलेक्ट रिक्वेस्ट जैसी कोई सूचना मिलती है तो उसे ध्यान से चेक करें, गलती से अप्रूव करने पर आपके अकाउंट से पैसा कट सकता है और बैंक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होगा। पर हां, अगर आपने कोई यूपीआई ट्रांजेक्शन किया है और ट्रांजेक्शन फेल हो गया है, लेकिन आपका पैसा कट चुका है तो तुरंत शिकायत करें। सामान्यतया तीन दिनों में अपने आप ही कटा हुआ पैसा वापस आ जाएगा।



**एटीएम का इस्तेमाल:** यदि एटीएम से पैसा निकलते समय पैसा न निकले और बैलेंस कट जाए तो तुरंत संबंधित बैंक से इसकी शिकायत करें। पांच कामकाजी दिनों के भीतर आपका पैसा वापस आ जाएगा। जहां तक एटीएम ट्रांजेक्शन लिमिट का सवाल है तो मेट्रो शहरों में हर बैंक ग्राहक को तीन ट्रांजेक्शन प्रतिमाह मुफ्त है। अगर आप किसी गैर मेट्रो शहर में रहते हैं तो आपको

पांच बार किए गए ट्रांजेक्शन के लिए भी कोई फीस नहीं देनी पड़ती। लेकिन इससे ज्यादा बार की ट्रांजेक्शन पर बैंक की तय फीस देनी पड़ती है। अगर आपने एटीएम से ट्रांजेक्शन के दौरान तीन बार गलत पिन डाल दिया है तो 24 घंटे तक के लिए आपका खाता ब्लॉक हो जाएगा। 24 घंटे के बाद आप पुनः सही पिन डालकर एटीएम से ट्रांजेक्शन कर सकते हैं।

**नेट बैंकिंग से संबंधित नियम:** नेट बैंकिंग के लिए टू फैक्टर ऑथेंटिकेशन अनिवार्य है जैसे ओटीपी और पासवर्ड। अगर लंबे समय तक आपका नेट बैंकिंग अकाउंट एक्टिव नहीं रहता है तो आपके अकाउंट से ऑटो लॉग आउट हो जाएगा। हर तीन से छह महीने के भीतर आपको अपने नेट बैंकिंग अकाउंट का पासवर्ड चेंज कर लेना चाहिए। कभी भी ईमेली गैस या ब्रेक किए जा सकने वाले पासवर्ड न बनाएं।

**बैंकों की जिम्मेदारी:** धोखाधड़ी से संबंधित किसी भी रिपोर्ट को बैंक को दस कार्य दिवस में हल करना होता है यानी आप जो शिकायत करते हैं, उसकी जांच उन्हें दस दिन के भीतर करनी होती है। अगर बैंक दस दिनों तक आपकी रिपोर्टों को जांच पूरी नहीं करती, तो कानून के हिसाब से वह आपके अकाउंट से हुई धोखाधड़ी की रकम पर ब्याज भी देगा। साथ ही बैंक आपके पैसे की सुरक्षा के लिए ओटीपी, एसएमएस अलर्ट, लिमिटेड सेंटिंग, कार्ड ऑन/ऑफ फीचर देने के लिए भी बाध्य है। हर बैंक अपने ग्राहक को साइबर क्राइम की रिपोर्ट कराने के लिए 1930 नंबर पर तत्काल कॉल करने की सुविधा देती है ताकि धोखाधड़ी को तुरंत रोका जाए। इसके अलावा [www.cybercrime.gov.in](http://www.cybercrime.gov.in) इस आधिकारिक ऑनलाइन पोर्टल पर आप ऑनलाइन रिपोर्ट कर सकते हैं। बैंक आपके दावे को सही माने, इसलिए एफआईआर या ऑनलाइन शिकायत आर सीड, कर्मेशन नंबर अपने पास रखना जरूरी है। \*

धर्म-कर्म  
गुणेंद शर्मा

**पितृ-पक्ष** में हम पूर्वजों को याद करते हैं और उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं। इन दिनों हमें अपने मन को शांति एवं पवित्र रखकर पितरों के लिए बताए गए अनुष्ठान करने चाहिए। यदि हम ऐसा करते हैं तो पितृ प्रसन्न होकर हमें सुख, शांति एवं समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं।

**पवित्र अवसर है पितृ-पक्ष:** पितृ-पक्ष पूर्वजों के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान प्रकट करने का एक विशेष, पवित्र अवसर है। पितृपक्ष काल में परिजन न केवल पूर्वजों को याद करते हैं, बल्कि उनकी आत्मा की शांति एवं मुक्ति के लिए विभिन्न अनुष्ठान भी करते-कराते हैं। श्राद्ध-पक्ष में पितरों के प्रति श्रद्धा भाव से किए जाने वाले अनुष्ठानिक कार्य कल्याणकारी माने गए हैं।

**पौराणिक मान्यता:** पुराणों में वर्णित श्राद्ध कर्म द्वारा लोग पितरों-पूर्वजों का स्मरण कर, उन्हें श्रद्धा अर्पित करते हैं। अपने जन्म एवं जीवन दाताओं को याद करते रहना, इसके लिए उनका आभार प्रकट करना, पुत्र-पौत्रादि का धर्म है। निश्चित रूप से ऐसा कर मन को शांति मिलती है। गरुड पुराण के अनुसार जब किसी व्यक्ति को मृत्यु हो जाती है, तो उसकी आत्मा तुरंत मोक्ष प्राप्त नहीं करती, बल्कि विभिन्न योनियों से होते हुए पितृलोक में पहुंचती है। यदि मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार तथा उसके बाद के कर्मकांड ठीक से नहीं किए जाएं या हो पाएं, तो मृत-आत्मा भटकती है एवं अतृप्त रहती है। ऐसे में पितरों का अतृप्त आत्मा अपने वंशजों से रुठ हो जाती है। पितरों के अतृप्त आत्मा की स्थिति में परिवार में विभिन्न प्रकार की विघ्न-बाधाएं आती हैं, जिसे पितृ दोष कहा जाता है। गरुड पुराण, मार्कंडेय पुराण एवं विष्णु पुराण जैसे ग्रंथों में श्राद्ध के महत्व को विस्तार से बताया गया है। इन ग्रंथों के अनुसार, पितृ-पक्ष के दौरान पितृ-गण पृथ्वी-लोक पर आते हैं तथा अपने वंशजों द्वारा

## मुश्किल नहीं है कुछ भी अगर ठान लीजिए

टूढ़ इच्छा शक्ति, मेहनत और लगन के बल पर जीवन में कुछ भी हासिल किया जा सकता है। जीवन में सफलता पाने के कुछ गोल्डन रूल्स हैं, जिन्हें फॉलो करके मुश्किल से मुश्किल लक्ष्य को साधा जा सकता है।

सेल्फ मोटिवेशन / शिखर चंद जैन

**म**हान संत स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को हमेशा निडर, कर्मठ और सकारात्मक सोच रखने की प्रेरणा दी। स्वामी जी कहा करते थे, 'जो भी करो पूरी लगन और एकाग्रता से करो। खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।' युवाओं को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए दुनिया भर के विद्वानों और मोटिवेशनल स्पीकर्स ने समय-समय पर बड़ी कारगर, महत्वपूर्ण और उपयोगी बातें कही हैं। इनके बारे में आप भी जानिए।

**जरूरी है सेल्फ कॉन्फिडेंस:** अगर आप जीवन में सफल होना चाहते हैं तो खुद को दायरे में बांधना बंद करें और पूर्वाग्रह से मुक्त रहने की कोशिश करें। ऐसा कभी ना सोचें कि जो कभी आपके किसी मित्र या परिवार के किसी सदस्य ने नहीं किया वह आप भी नहीं कर सकेंगे। आपको अपनी क्षमताओं और कमियों को पहचानना होगा और खुद को इस योग्य बनाना होगा कि आप जो चाहे कर सकें।

**न समझें खुद को कमजोर:** डर हमें जीवन में कुछ नया नहीं करने देता। नई स्किल सीखने, चुनौतियां स्वीकार करने, नया प्रोफेशन या बिजनेस करने में असफल होने का जोखिम होता है। लेकिन इस जोखिम या असफलता के डर से कोशिश नहीं करना बिल्कुल भी सही नहीं है। जो खुद को कमजोर समझते हैं या डरते रहते हैं, वे जीवन में कुछ भी नया या बड़ा हासिल नहीं कर पाते हैं। पुस्तक 'करेज एंड कॉन्फिडेंस एन एंथोलॉजी' के लेखक नॉर्मन विसेंट पील ने अपनी पुस्तक में लिखा है, 'डर लोगों को शारीरिक रूप से कमजोर बना देता है। किसी न किसी रूप में डर लोगों को वह हासिल करने से रोक देता है, जो वे जीवन में वाकई हासिल करना चाहते हैं।' **एकाग्र होकर काम करें:** एक समय में एक काम करें और ऐसा करते समय अपनी पूरी ऊर्जा और ताकत उसमें डाल दें और बाकी सब कुछ भूल जाएं। आज के डिजिटल युग में विभिन्न माध्यमों से सूचनाओं और जानकारीयों की बाढ़ ने हमारे मस्तिष्क को एकाग्रता को छीन लिया है। चाहे पढ़ाई-लिखाई करनी हो या वर्क प्लेस पर अपना हिसाब-किताब लिखना हो, अपने ग्राहक से डील करनी हो या फिर कोई प्रोडक्ट बनाना हो। आप कोई भी काम तभी ठीक से कर सकते हैं, जब आप उसे पूरी तरह एकाग्रचित होकर करें। पुस्तक 'हाइपर फोकस' के लेखक क्रिस बेली लिखते हैं, 'अगर आपको अपने चंचल चित्त को स्थिर करना है तो सबसे पहले फालतू चीजों पर अनफोकस करें।' वे कहते हैं कि आज हम बिना ध्यान बंटए कंप्यूटर पर सिर्फ 40 सेकेंड ही लगातार काम कर पाते हैं। इस



समय को बढ़ाकर ही हम अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकेंगे। उन्होंने लिखा है, 'हाइपर फोकसिंग से ही हम अपना सबसे बेहतरीन संस्करण बन सकते हैं।' **समस्याओं को धैर्यपूर्वक हल करें:** किसी समस्या के सामने आते ही अगर आप घबरा जाते हैं या हड़बड़ा जाते हैं तो जल्दबाजी में न सही उपाय सोच पाते हैं, न ही उसका हल निकाल पाते हैं। यहाँ तक कि आप अपने सच्चे और विश्वसनीय मददगार का नाम भी याद नहीं कर पाते। इस स्थिति में समस्या के एक ही हिस्से पर आपका नियंत्रण होता है और वह है आपकी प्रतिक्रिया। समस्याएं हमारे भीतर के सर्वश्रेष्ठ गुणों को बाहर निकालती हैं, क्योंकि मुसीबत में ही हम अपनी क्षमताओं के बारे में ठीक से सोच पाते हैं। पुस्तक 'थिंकिंग फास्ट एंड स्लो' के लेखक डेनियल कानमैन कहते हैं, 'जब आप चिंतित होने की बजाय किसी समस्या को रचनात्मक तरीके से हल करने की कोशिश करेंगे तो ज्यादा प्रभावशाली



बनेंगे। परिणामस्वरूप आप खुद को पहले से ज्यादा बड़ी समस्याएं हल करने के लायक बना लेंगे।' **अनुशासन का पालन करें:** स्वतंत्रता और मनचाहा करने की छूट लेना हमारे स्वभाव में होता है। लेकिन यह विवेकपूर्ण, संयमित और अनुशासन युक्त होनी चाहिए। यह आप पर निर्भर करता है कि आप सीमा में रहकर अपनी क्षमता से जीवन को उत्कृष्ट बनाएं या उसकी उपेक्षा करके अपने लिए दुख आमंत्रित करें। स्वच्छता वास्तव में स्वतंत्रता नहीं है। इसका परिणाम अन्ततः विनाश ही है। इस संदर्भ में बेस्ट सेलर पुस्तक 'द नाउ हैबिट' के लेखक नील फियोरे ने कहा है, 'दिमाग वही कारण चाहता है जो उसे पसंद है। लेकिन जो व्यक्ति जीवन में अपने दिमाग की पसंद और सुविधा से चलता है वह कभी कुछ हासिल नहीं कर पाता।' इसलिए जरूरी कामों को टालने की बजाय प्राथमिकता से करना जरूरी है। \*

आज से पितृ पक्ष आरंभ हो रहे हैं। पुराणों में इस दौरान अपने पूर्वजों को श्राद्ध एवं तर्पण के द्वारा तृप्त करने का विधान दिया गया है। इससे न केवल जीवन में शांति-समृद्धि आती है, पुरखों का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है।

## पुरखों से पाएं सुख-शांति समृद्धि का आशीर्वाद



किंग गए तर्पण एवं श्राद्ध को स्वीकार करते हैं। जो व्यक्ति पूरी श्रद्धा से श्राद्ध करता है, उसे पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है, जिससे

विवरण शास्त्रों में मिलता है। **तर्पण:** प्रतिदिन सुबह स्नान के बाद दक्षिण दिशा की ओर मुख कर जल में काला तिल, जी एवं कुश मिलाकर तर्पण करना चाहिए। यह पितरों को जल अर्पित करने का एक उपाय है, जिससे उनकी प्यास बुझती है। **श्राद्ध की विधि:** पितरों की मृत्यु तिथि के अनुसार श्राद्ध कर्म करना चाहिए। श्राद्ध के दिन किसी योग्य ब्राह्मण को आमंत्रित कर भोजन कराएं। भोजन में खीर, पूड़ी तथा पितरों की पसंद के सात्विक भोज्य पदार्थ शामिल करें। **पिंडदान:** आटा, जौ, चावल एवं

निकटतम किसी भी पवित्र धार्मिक-स्थल, नदी, तालाब, कुंड, सागर कहीं भी किया जा सकता है। **दान-पुण्य:** श्राद्ध-पक्ष में दान का मिलाकर तर्पण करना चाहिए। दान करने से न केवल पितृ प्रसन्न होते हैं, बल्कि जीवन की परेशानियां भी दूर होती हैं। पितृ-पक्ष में दान के योग्य मानी जाने वाली निम्न वस्तुएं उचित मानी जाती हैं। इसमें आप अन्न, फल, चांदी का दान कर सकते हैं। श्राद्ध कर्म के दौरान भोजन का कुछ हिस्सा गाय, कौवे, कुत्ते एवं चिंटियों को भी खिलाना चाहिए। **ये भी है जरूरी:** पितृ-पक्ष के 15 दिनों तक सात्विक जीवन का पालन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। पितृ-पक्ष के प्रहृद दिन परिवार में लहसुन, प्याज एवं मांसाहार का सेवन पूरी तरह से वर्जित होता है। इन दिनों ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए तथा अपने घर एवं मन दोनों को पवित्र रखें। प्रतिदिन शाम के समय घर की दक्षिण दिशा में सरसों के तेल का दीपक जलाना चाहिए। पीपल के पेड़ में दूध, काला तिल एवं जल चढ़ाएं। पीपल के तेल को पितरों का वास माना जाता है। पितृ स्त्रोत का पाठ करना भी पुण्यकारी होता है। \*

उसके जीवन में सुख, समृद्धि, आयु, यश, धन आदि की प्राप्ति होती है। मार्कंडेय पुराण में कहा गया है कि 'श्राद्ध से तृप्त होकर पितृ-गण श्राद्धकर्ता को दीर्घायु, संतति, धन, विद्या, सुख, राज्य, स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करते हैं।' महर्षि सुमंतु के अनुसार, 'इस संसार में पितरों से बढ़कर कोई दूसरा कल्याणप्रद कर्म नहीं है।' **ऐसे होते हैं पितृ प्रसन्न:** पितरों को प्रसन्न रखने एवं उनका आशीर्वाद पाने के लिए पितृ-पक्ष में नियमानुसार कुछ विशेष कार्य तथा अनुष्ठान किए जाते हैं, जिनका

